

₹15/-

\* वर्ष 44 \* अंक 02

\* फरवरी 2017

# दृष्टि दुनिया





## हँसती दुनिया

• वर्ष 44 • अंक 02 • फरवरी 2017 • पृष्ठ 52  
**बच्चों के बौद्धिक विकास की अनूठी पत्रिका**  
 (पंजाबी, अंग्रेजी व मराठी में भी प्रकाशित)

सी. एल. गुलाटी, प्रभारी पत्रिका विभाग

प्रकाशक एवं मुद्रक राधेश्याम ने सन्त निरंकारी मण्डल, दिल्ली-9 हेतु एम.पी. प्रिंटर्स बी-220 फेस-II, नोएडा-201 305 (उ.प्र.) से मुद्रित करवाकर सन्त निरंकारी सत्संग भवन, सन्त निरंकारी कालोनी, दिल्ली-09 से प्रकाशित किया।

**मुख्य सम्पादक : हरजीत निषाद**

सम्पादक  
विमलेश आहूजा

सहायक सम्पादक  
सुभाष चन्द्र

Ph.: 011-47660200  
 Fax: 01127608215  
 Email: editorial@nirankari.org  
 Website: <http://www.nirankari.org>  
[kids.nirankari.org](http://kids.nirankari.org)

### Subscription Value

|  | India/<br>Nepal | UK | Europe | USA | Canada/<br>Australia |
|--|-----------------|----|--------|-----|----------------------|
|--|-----------------|----|--------|-----|----------------------|

|         |        |     |      |       |       |
|---------|--------|-----|------|-------|-------|
| Annual  | Rs.150 | £15 | € 20 | \$25  | \$30  |
| 5 Years | Rs.700 | £70 | € 95 | \$120 | \$140 |

### Other Countries

Equivalent to U.S. Dollars as mentioned above.



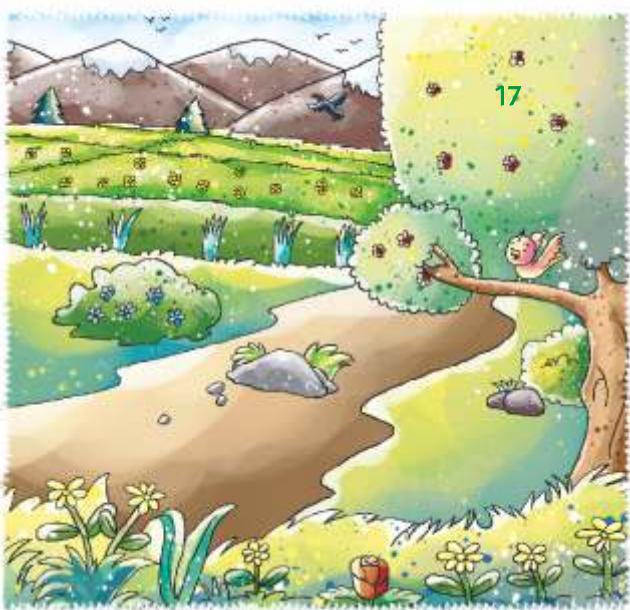
### स्तरभ

4. सबसे पहले
5. सम्पूर्ण अवतार बाणी
7. अनमोल वचन
11. समाचार
20. वर्ग पहेली
24. पहेलियां
43. कभी न भूलो
44. पढ़ो और हँसो
46. क्या आप जानते हैं?
48. रंग भरो परिणाम

### पत्रिकथाएं

- 12 दादा जी  
 34 किटटी

**मुख्यपृष्ठ : निरंकारी आर्टग्रुप**



### विषेष / लेख

16. कैसे हुआ ई-मेल का आविष्कार  
: किरण बाला
18. बहुत उपयोगी है ऊंट  
: कैलाश जैन एडवोकेट
28. डायनासोर  
: कैलाश जैन एडवोकेट
31. विज्ञान प्रश्नोत्तरी  
: डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल
32. पुरानी बातें याद रखने वाली कोशिकाएं  
: विभा वर्मा
32. शरीर के समस्त अवयवों की ...  
ईलू रानी
33. एक जल जीव का ...  
: कमल सोगानी
38. मनुष्य का मित्र है ...  
: सीताराम गुप्ता



### कठानियां

#### कविताएं

6. रंग बिरंगी धरती  
: डॉ. परशुराम शुक्ल
17. आया प्रिय ऋतुराज बसन्त,  
बेईमानी हमें न भाती  
: हरजीत निषाद
27. फूल से बातें  
: राजीव कुमार
39. ऋतुराज बसन्त,  
राजेश पुरोहित
39. फूल  
: महेन्द्र कुमार वर्मा
47. फूलों का आया मौसम,  
भैरे  
: रामसागर 'सदन'
8. सौ घुड़सवारों की टुकड़ी  
: अर्चना जैन
8. विद्या सौन्दर्य  
: ऊषा सभरवाल
9. आलस का परिणाम  
: कीर्ति श्रीवास्तव
21. कौआ और कोयल  
: साबिर हुसैन
25. समय पर उचित साहस  
: राधेलाल 'नवचक्र'
40. लौट आया बल्लू  
: डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'



## सबसे पहले

**आज** बच्चों की नैतिक शिक्षा की कलास हो रही थी। अध्यापक ने सभी बच्चों से पूछा— हमें कैसा जीवन जीना चाहिए?

सभी बच्चों ने बारी—बारी अपनी बात कही।

अधिकतर बच्चों ने ये बातें कहीं—

— हमें सुबह जल्दी उठना चाहिए।

— हमें अपने माता—पिता का कहना मानना चाहिए।

— हमें सभी बड़ों और गुरुजनों का सम्मान करना चाहिए।

— हमें झूट नहीं बोलना चाहिए।

— हमें प्यार से बात करनी चाहिए।

— हमें क्रोध नहीं करना चाहिए, किसी से झगड़ा नहीं करना चाहिए।

— हमें जरूरतमन्द की सहायता करनी चाहिए इत्यादि—इत्यादि।

इसी तरह की अनेकों बातें सभी बच्चों ने अपने शिक्षक को बताई। शिक्षक को बहुत खुशी हुई कि आज के समय में भी बच्चों को वह हर बात मालूम है जिसके लिए उन्हें पढ़ाया जा रहा है।

शिक्षक ने फिर पूछा— आपने जो यह बातें कहीं हैं। क्या आप इन सभी बातों को मानते हैं कि ये ठीक हैं?

सभी बच्चों ने एक स्वर में कहा— ‘जी सर।’

इस बार शिक्षक बोले— अब वह विद्यार्थी खड़ा हो जाए जो इन सभी कही बातों को मानता भी है और इन कही बातों को अपने आचरण एवं जीवन का हिस्सा बना चुका है।

अब कोई भी विद्यार्थी उठकर खड़ा नहीं हुआ। कलास में सन्नाटा—सा छा गया।

शिक्षक ने बड़े प्यार से विद्यार्थियों से कहा— ‘अच्छी बातों की जानकारी होना बहुत ही उपयोगी होता है। जानकारी के साथ—साथ इन्हें

हमें अपनी दिनचर्या में भी लाना होगा और इसके लिए हमें अपने प्रयास भी करते रहने होंगे। प्रयास भी वही कर सकता है जिसको उन बातों की उपयोगिता मालूम है। या तो हमें उपरोक्त कही बातों की उपयोगिता की जानकारी नहीं है अथवा हम प्रयास ही नहीं करना चाहते। प्रयास न करने का कारण आलस्य होता है। हमें आलस्य को त्यागकर जीवन में आगे बढ़ना है और मानवीय शिक्षा की ऊँचाईयों को प्राप्त करना है।’

ऐसे ही एक महान व्यक्तित्व हुए हैं जिनमें उपरोक्त सभी सद्गुणों का समावेश है एवं उन्होंने जीवन में कभी भी विषम परिस्थितियों से हार नहीं मानी और मानव कल्याण के लिए पूरा जीवन समर्पित कर दिया। जिन्होंने हर मानव को सत्य से जोड़ा परिणास्वरूप सत्य से जुड़ने से असत्य अपने—आप मिट गया, प्रकाश की ज्योति जलाई तो अंधकार स्वयं ही भाग खड़ा हुआ। जो भी उनके पास आया उसे उन्होंने अमृतरस पिलाया जिससे उसके मन की कड़वाहट अपने—आप दूर हो गई। प्यार को हृदय में बसाया, क्रोध आदि का नामोनिशान गायब हो गया। अपनी दिव्य मुस्कान से सभी के दुःख—दर्द का निवारण कर दिया। उनके सान्निध्य में जो भी आया आत्मविभोर हो गया क्योंकि उन्होंने अपने जीवन में सभी को सहयोग ही दिया और जीवन को पूरी तर्फ जीकर दिखाया। वे स्वयं प्यार थे इसलिए सबको भरपूर प्यार दिया। वे स्वयं जीवनमुक्त निराकार हुए इसलिए सभी को निराकारमय किया।

ऐसी दिव्य विभूति को हम सद्गुरु बाबा हरदेव सिंह जी महाराज के नाम से जानते हैं जिनका इस संसार में 23 फरवरी 1954 को आगमन हुआ। आप मानवता के संरक्षक बने एवं मानवता का कल्याण किया। आपने हम सभी को एक सुन्दर जीवन जीकर दिखाया और आदर्श जीवन जीने का हमारा मार्ग प्रशस्ति किया।

**-विमलेश आहूजा**



हमारे पवित्र ग्रंथ : हरजीत निषाद

## सम्पूर्ण अवतार बाणी

पद संख्या : 145

निरंकार नूं जाण के जेहड़ा मालक दे गुण गांदा ए।  
बौहड़ न होवे जमणा मरना ओह जन मुक्ति पांदा ए।  
निरंकार नूं जाणे जेहड़ा उसदा पार उतारा ए।  
मंग न सकके लेखा कोई हर पासे छुटकारा ए।  
निरंकार नूं जाणे जेहड़ा खाणा पीणा सब परवान।  
निरंकार नूं जाणे जेहड़ा सफला उसदा पाण हंडान।  
निरंकार नूं जाणे जेहड़ा नहीं अकारथ कम कोई।  
निरंकार नूं जाणे जेहड़ा दुख रहे न गम कोई।  
बिन वेखे दे कार कमाये भुल्ल गया ए कुल संसार।  
अवतार गुरु न मेहर करे जे दिस नहीं सकदा एह निरंकार।

**भावार्थ :** उपरोक्त पद में बाबा अवतार सिंह जी बता रहे हैं कि निराकार—परमात्मा सब जगह है, सबसे शक्तिशाली है। समस्त जीव—जगत को उत्पन्न और पालन करने वाला है। इस प्रभु को जानकर जो इस मालिक के गुण गाता है उसको दोबारा जन्म लेना और मरना नहीं पड़ता। ऐसा मानव जन्म—मरण से छूटकर मुक्ति प्राप्त करता है। जो इस आकाररहित निरंकार—परमात्मा को सदगुरु की कृपा से जान लेता है, भवसागर से उसका सहज ही पार—उतारा हो जाता है।

यमराज जो इन्सान के कर्मों का लेखा—जोखा रखता है और अच्छे बुरे कर्मों के अनुसार उन्हें दण्ड देता है, निरंकार—प्रभु को जानने वाले से उसके कर्मों का लेखा नहीं मांगता। निरंकार को जानने वाले व्यक्ति को हर तरफ से छुटकारा मिल जाता है।

निरंकार को जानना महत्वपूर्ण है और इसे जानने वाला जो भी खाता—पीता है, सब परमात्मा की दरगाह में परवान होता है। उसका खाना,

पीना और पहनना सब सफल होता है। निरंकार—प्रभु को जो जानता है उसके लिए संसार में कोई दुख—गम नहीं रहता, वह हमेशा सुखी और प्रसन्न रहता है।

बाबा अवतार सिंह जी सत्य की राह से भटके लोगों को समझा रहे हैं कि यह सारा संसार भूला हुआ है और बिना देखे की भक्ति कर रहा है। बिना प्रभु को देखे इन्सान के द्वारा किए गए हर कर्म व्यर्थ साबित होते हैं। जिस निरंकार—प्रभु के दर्शनों का इतना लाभ है मानव को उसके दर्शन का प्रयास अवश्य करना चाहिए।

अन्त में बाबा अवतार सिंह जी स्पष्ट कर रहे हैं कि सदगुरु जब तक दया करके प्रभु के दर्शन नहीं कराता तब तक अपने प्रयासों से इस निरंकार—प्रभु के किसी को भी दर्शन नहीं हो सकते। सदगुरु की कृपा से ही इस प्रभु को जाना जा सकता है और ऐसे मानव को सहज जीवन जीते हुए मुक्ति प्राप्त होती है।



कविता : डॉ परशुराम शुक्ल

## रंग बिरंगी धरती

रंग बिरंगी धरती बच्चों,  
रंग बिरंगी धरती ।

देखो बच्चों इस धरती पर,  
वृक्ष हरे लहराते,  
इस पर बैठे पक्षी मीठे—  
मीठे राग सुनाते ।  
इनके नीचे रोज सवेरे,  
छोटी हिरनी चरती ।  
रंग बिरंगी धरती ।

ऊँचे—ऊँचे पर्वत नदियां,  
सबकी बात निराली ।  
इनकी शान बढ़ा देती है,  
जंगल की हरियाली ।  
बूढ़ी नानी इस जंगल की,  
हरदम रक्षा करती ।  
रंग बिरंगी धरती ।



जंगल का धरती से बच्चों,  
बहुत पुराना नाता ।  
बाघ, सिंह, गैंडे, हाथी को,  
सारा जंगल भाता ।  
पानी और हवा जंगल की,  
सबकी पीड़ा रहती ।  
रंग बिरंगी धरती ।

हरे—भरे लहराने वाले,  
जंगल को मत काटो ।  
मार जंगली जीवों को तुम,  
मौत न सबको बांटो ।  
जीव, जंगलों के मिट्टे ही,  
सारी दुनिया मरती ।  
रंग बिरंगी धरती बच्चों,  
रंग बिरंगी धरती ।



## अनमोल वचन

संग्रहकर्ता : जगतार 'चमन'

- ★ परमानन्दमय जीवन की असली नींव सन्तुलन है। यह ध्यान में रखने से आपका वर्तमान तथा भविष्य निश्चय ही सदा उज्ज्वल रहेंगे।  
— बाबा हरदेव सिंह जी महाराज
- ★ विजेता वे लोग नहीं हैं जो कभी पराजित नहीं हुए बल्कि विजेता वे हैं जिन्होंने हार के डर से मैदान छोड़ देने की गलती नहीं की।
- ★ व्यर्थ के कर्म भारीपन व थकान लाते हैं जबकि श्रेष्ठ कर्म हमें प्रसन्न व हल्का बनाकर ताजगी प्रदान करते हैं।
- ★ किसी से ईर्ष्या नहीं करनी बल्कि सभी से प्यार करना चाहिए।
- ★ जो प्रसन्न रहते हैं, उनके मन में कभी आलस्य नहीं आता। आलस्य एक बहुत बड़ा विकार है।
- ★ असफलता का मौसम, सफलता के बीज बोने के लिए सर्वश्रेष्ठ समय होता है।  
— परमहंस योगानन्द
- ★ उत्साह बलवान होता है। उत्साह से बढ़कर कोई दूसरा बल नहीं है। उत्साही व्यक्ति के लिए कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है।  
— इमर्सन
- ★ जहाँ तक नजर आता है, वहीं पहुँचिए। आपको आगे का रास्ता खुद ही नजर आ जाएगा।  
— जे.पी. मोर्गन
- ★ सबसे पहले आपको खेल के नियम पता करने होंगे। फिर जीत के लिए दूसरों से बेहतर खेलना होगा। — अल्बर्ट आइंस्टीन
- ★ मन, वचन और कर्म से किसी को दुख न पहुँचाओ।
- ★ क्रोध को क्षमा से, विरोध को अनुरोध से, धृणा को दया से और द्वेष को प्रेम से जीतो।  
— महर्षि दयानन्द
- ★ हो सकता है मैं आपके विचारों से सहमत न हो पाऊं। फिर भी विचार प्रकट करने के आपके अधिकारों की रक्षा करूँगा।  
— वाल्तेयर
- ★ एक बार कोई नया विचार मन में आ जाए तो उसे झटका नहीं जा सकता, नये विचार में अमरत्व का तत्व होता है। — न्यू थिंक
- ★ मैं नहीं जानता कि सफलता की सीढ़ी क्या है पर असफलता की सीढ़ी है हर किसी को खुश करने की कोशिश। — बिल कॉस्टी
- ★ सुबह तो होगी ही, उसके पास कोई विकल्प जो नहीं है।  
— मार्टी



इतिहास कथा : अर्चना जैन

## सौ घुड़सवारों की टुकड़ी

एक बार गुप्तचर सैनिक ने आकर महमूद गजनवी के कान में एक राज की बात कही...।

यह अनोखी बात सुनकर गजनवी को बहुत अचरज हुआ। वह मन में सोचने लगा— सौ घुड़सवार सैनिकों का यह दल भला हमारी एक लाख विशाल सेना का मुकाबला कैसे कर सकेगा?

हाँ, गजनवी को रह-रहकर पड़ोसी राजा की सैनिक टुकड़ी के बूढ़े सरदार की अक्ल पर तरस आ रहा था जो निर्थक ही उसकी विशाल सेना से टकराने का दुःसाहस कर रहा था ...।

महमूद गजनवी ने अपना दूत भिजवाकर उन योद्धाओं का आशय पूछवाया। दूत द्वारा प्राप्त स्पष्टीकरण सुनकर महमूद गजनवी सचमुच उनकी वीरता एवं कर्तव्यनिष्ठा से अभिभूत हो गया।

बूढ़े राजपूत सरदार ने जवाब भिजवाया था— हम जानते हैं कि संख्या और साधनों में बहुत अन्तर है तथा इसका परिणाम क्या होगा यह भी हमसे छिपा हुआ नहीं है, मगर तुम्हारा बादशाह सोमनाथ मन्दिर लूटने वाला लुटेरा है, आक्रांता है, अनीति और अन्याय को सहना तथा सहते हुए जीवित रहना अत्यन्त दुष्कर है। सर्वोत्तम है उसका प्रतिकार करते हुए समाप्त हो जाना ...।

सचमुच घुड़सवारों की वह टुकड़ी जान हथेली पर लेकर गजनवी की विशाल सेना पर टूट पड़ी। हजारों सैनिकों को मूली—गाजर की भाँति काटते हुए वे स्वयं वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी वीरता एवं कर्तव्यनिष्ठा देखकर महमूद गजनवी वाह—वाह कर उठा तथा सिर झुकाकर उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। ■



प्रेरक—प्रसंग : ऊषा सभरवाल

## विद्या-सौन्दर्य

एक बार सप्राट चन्द्रगुप्त, चाणक्य से किसी बात पर चर्चा कर रहे थे कि अकस्मात् सप्राट ने चाणक्य से कहा— आपकी विद्वता, सूझबूझ व वाक्-पटुता की मैं दाद देता हूँ मगर क्या ही अच्छा होता कि परमात्मा आपको विद्वता के साथ—साथ रूप सौन्दर्य भी प्रदान करता।

चाणक्य ने समझ लिया कि राजा को अपने सौन्दर्य का घमण्ड हो गया है और वह रूप के सामने विद्या को नगण्य समझ रहा है। चाणक्य ने सेवक को बुलाकर मिट्टी और सोने के दो पात्रों में जल लाने को कहा। जल आ गया तो चाणक्य ने राजा से पहले मिट्टी के पात्र का और बाद में स्वर्ण के पात्र का जल पीने के लिए कहा।

राजा ने आदेश का पालन किया तो चाणक्य ने पूछा— राजन्! किस पात्र का जल शीतल लगा। चन्द्रगुप्त ने उत्तर दिया— मिट्टी के पात्र का।

इस पर चाणक्य ने कहा— महाराज! वैसे तो दोनों में ही डाला गया जल शीतल था किन्तु बाहर से सुन्दर दिखाई देने वाले स्वर्ण—पात्र का जल शीतल नहीं रहा जबकि मिट्टी के पात्र का जल शीतल रहा। यही बात सौन्दर्य और विद्या की है। सुन्दरता और कुरुपता का विद्या से कोई सम्बन्ध नहीं बल्कि विद्या सौन्दर्य से श्रेष्ठ है। परमात्मा ने मुझे विद्या दी है सौन्दर्य नहीं। ■



बाल कहानी : कीर्ति श्रीवास्तव

## आलस का परिणाम

**चंदन** जंगल में नंदन नाम का एक स्कूल था। जहाँ जंगल के सभी जानवर पढ़ा करते थे। उसमें से महाआलसी चंपक चूहा भी था। चंपक कभी—भी अपना होमवर्क नहीं करता था।

चंपक का पक्का दोस्त था हीरु हिरण। चंपक रोज उससे ही अपना होमवर्क करा लेता था। जब वह मना करता तो कहता— 'कल पक्का मैं अपना होमवर्क करूँगा।' पर चंपक का कल कभी नहीं आता था।

एक दिन अध्यापक जी ने जैसे ही परीक्षा की तिथि घोषित की तो सभी जानवर परीक्षा की तैयारी में लग गये। पर चंपक को कोई मतलब नहीं था।

"चंपक परीक्षा शुरू होने वाली है पढ़ाई नहीं कर रहे हो।" चंपक की मम्मी ने गुस्से से चंपक को कहा।

"माँ कल से पक्का पढ़ना शुरू कर दूँगा।" चंपक ने थोड़ा अलसाते हुए कहा।

रोज यही होता। चंपक की मम्मी रोज पढ़ने को कहती और चंपक रोज कल पर टाल देता था। एक दिन उसकी मम्मी ने तंग आकर सोचा— "अब तो चंपक को सबक सिखाना ही होगा।"

अगली सुबह रोज की तरह ही चंपक ने दूध मांगा।

"आज दूध नहीं लाई बेटा।" अपनी योजनानुसार मम्मी ने कहा।

"मुझे दूध अभी पीना है।" चंपक ने गुस्से में कहा।





“कल पक्का ले आऊँगी।” मम्मी ने हल्की मुस्कुराहट के साथ कहा।

“माँ, बहुत जोर की भूख लगी है। जल्दी से खाना दे दो।” चंपक ने पेट पकड़ते हुए कहा।

“अरे आज तो मैं सब्जी लाई ही नहीं तो खाना नहीं बनाया। एक काम करो सब्जी कल ले आऊँगी पक्का।” मम्मी ने भी अपनी योजना को आगे बढ़ाते हुए जवाब दिया।

चंपक उदास हो गया फिर उसने सोचा— “चलो दोस्तों के साथ थोड़ी देर खेल आता हूँ।”

खेलते—खेलते चंपक गिर गया और वह रोते—रोते मम्मी के पास आकर बोला— “माँ मुझे चोट लग गई है, दवा लगा दो।”

माँ ने देखा कि चोट ज्यादा नहीं लगी है इसलिए उसने कहा— “दवा खत्म हो गई है, कल बाजार जाऊँगी तब लाकर लगा दूँगी।”

चंपक गुस्से में चिल्ला उठा— “क्या आपने हर काम के लिए कल—कल लगा रखी है। आज का काम तो आज ही होगा न। भूख तो अभी लगी है, चोट भी अभी लगी है।”

“क्यों तुम भी तो हर काम कल पर टाल देते हो।” मम्मी तपाक से बोली।

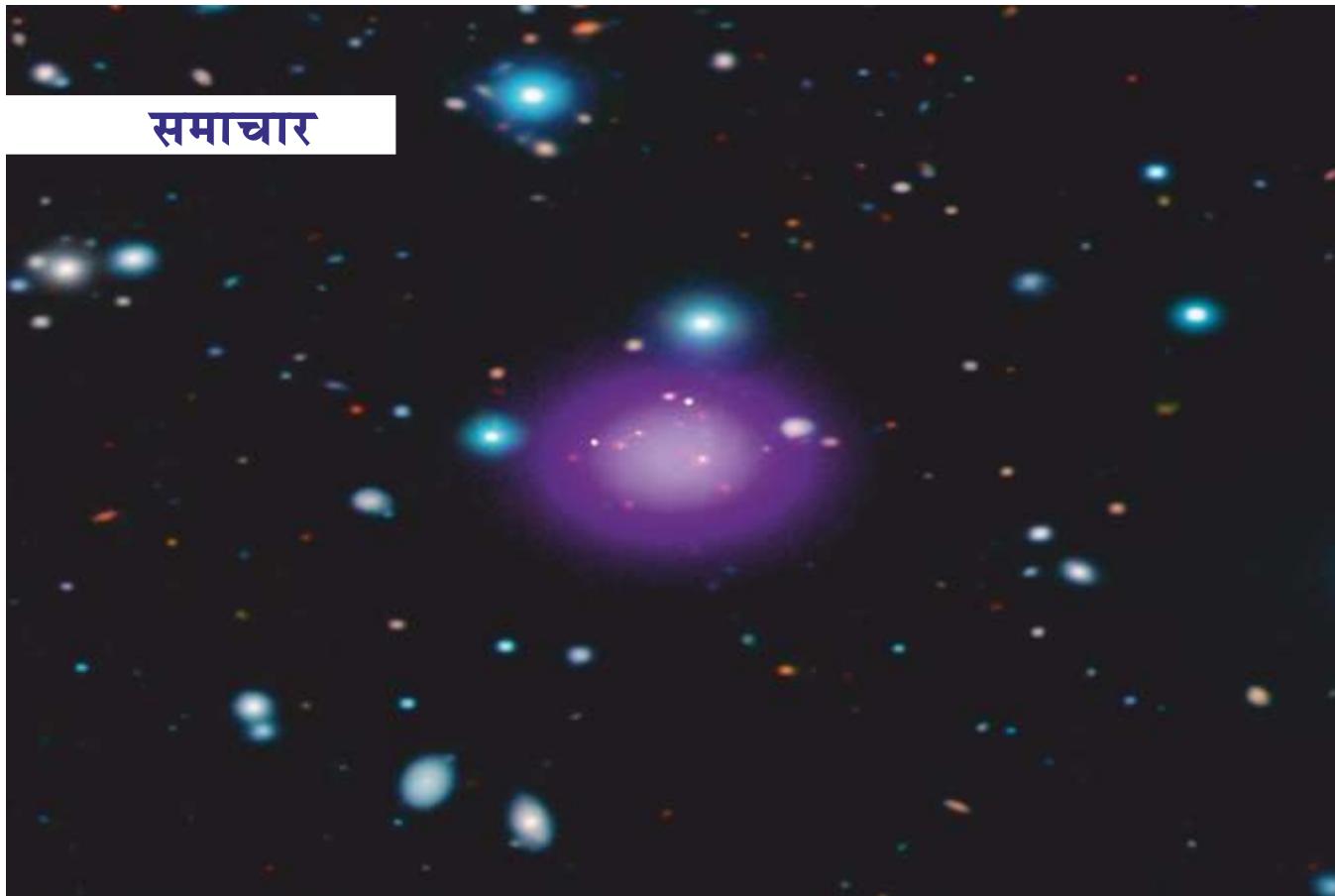
चंपक को अपनी गलती समझ में आ गई कि ये सब मम्मी उसे सबक सिखाने के लिए ही कर रहीं थीं।

“माँ अब मैं कोई भी काम कल पर नहीं टालूँगा, पढ़ाई भी समय पर करूँगा, कभी आलस नहीं करूँगा। मुझे माफ कर दो माँ।” चंपक कान पकड़कर बोला।

“काल करे सो आज कर, आज करे तो अब” मम्मी ये कहते हुए चंपक को गले लगा लेती हैं और उसे उसकी ही पसन्द का खाना भी देती हैं



## समाचार



### पृथ्वी से सबसे दूरी पर स्थित आकाशगंगा का पता चला

लंदन। वैज्ञानिकों ने पृथ्वी से 11.1 अरब प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित आकाशगंगा के एक समूह का पता लगाया है। आकाशगंगा का यह समूह अब तक प्राप्त आंकड़ों के अनुसार पृथ्वी से सबसे अधिक दूरी पर स्थित है।

अनुसंधानकर्ताओं ने नासा की चंद्र एक्सरे वेधशाला और अन्य दूरदर्शी की मदद से आकाशगंगा के इस समूह का पता लगाया गया है। अनुसंधान की अगुवाई करने वाले फ्रेंच वैकल्पिक ऊर्जा और परमाणु ऊर्जा आयोग (सीईए) के ताओ वांग ने कहा, 'यह आकाशगंगा केवल दूरी के लिहाज से ही महत्वपूर्ण नहीं है वरन् इसमें हो रही प्रगति भी उल्लेखनीय है, जो इससे पहले कभी नहीं देखा गया।' आकाशगंगा के इस समूह को सीएल जे 1001 प्लस 0220 नाम दिया गया है जो पृथ्वी से 11.1 अरब प्रकाशवर्ष की दूरी पर स्थित है। अनुसंधानकर्ताओं ने बताया कि अध्ययन के अनुसार इस आकाशगंगा का गठन 70 करोड़ वर्ष पूर्व हुआ था। सीएल जे 1001 के कोर में 11 बड़ी आकाशगंगा हैं। इस अध्ययन का विकास 'एस्ट्रोफिजिकल जर्नल' में हुआ है। भाषा

— संग्रहकर्ता : बबलू कुमार

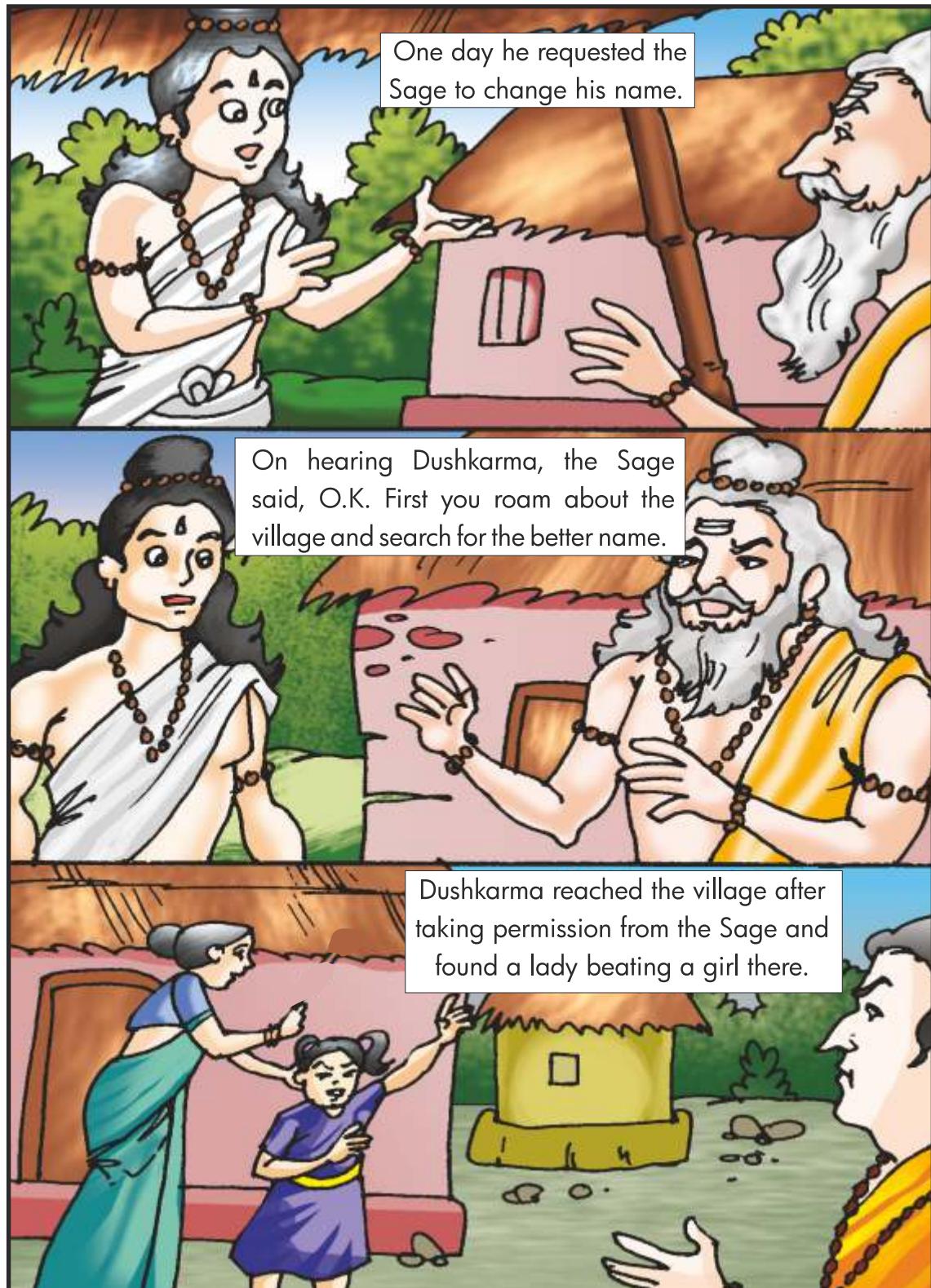




Once there was a sage hermitage on the bank of Ganges, where many disciples used to get education. Also, there was a disciple named Dushkarma.

Dushkarma had a problem that whenever other disciples called him by his name he felt very much distressed.

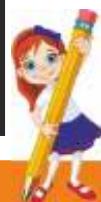




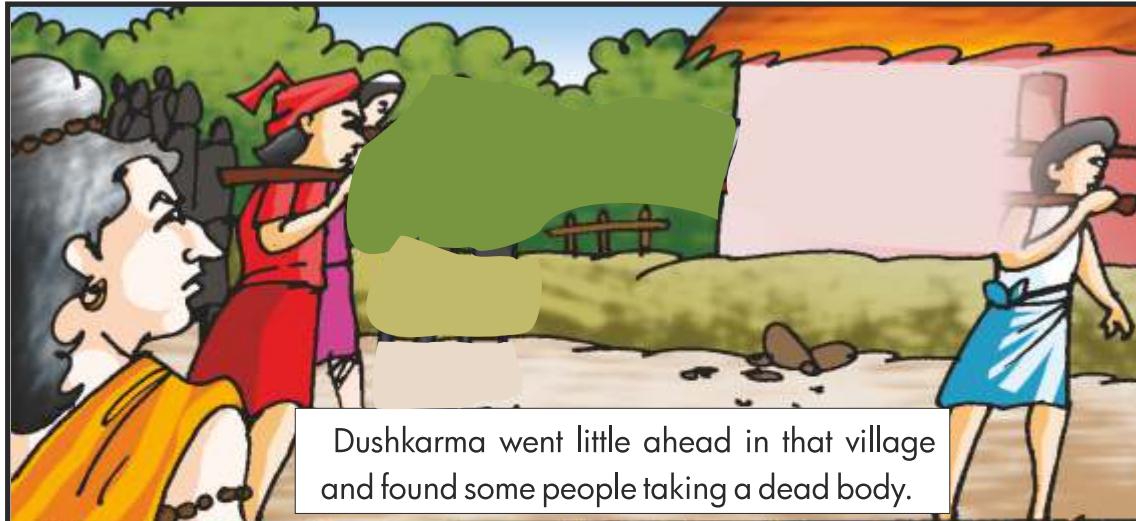
One day he requested the Sage to change his name.

On hearing Dushkarma, the Sage said, O.K. First you roam about the village and search for the better name.

Dushkarma reached the village after taking permission from the Sage and found a lady beating a girl there.







Dushkarma went little ahead in that village and found some people taking a dead body.

Dushkarma asked some person the name of the dead.

His name was 'Amar'.

Oh! Amar ever die also!

How stupid you are. Name is just for the recognition.

Dushkarma had now understood the idea of the Sage.



On reaching the hermitage, Dushkarma said to the Sage, "Guru Ji! I have now understood that the name is just for the recognition. The real recognition, respect and regard of a person are due to his merits and activities and not due to his name."



जानकारी : किरण बाला

## कैसे हुआ ई-मेल का आविष्कार



**समय** के साथ बहुत कुछ बदल जाता है। एक समय था जब डाक द्वारा पत्र एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजे जाते थे। इसमें हफ्तों का समय लगता था। लेकिन कम्प्यूटर के इस युग में ई-मेल ने यह काम पलक झपकते ही कर दिखाया। आज ई-मेल द्वारा ही सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है। जो ई-मेल इतना लोकप्रिय है, क्या आप उसके आविष्कार और आविष्कारक के बारे में जानना नहीं चाहोगे?

क्या आप जानते हैं कि ई-मेल के आविष्कारक कौन हैं? तो इसका श्रेय एक भारतीय अमेरिकी वीए शिवा अच्यादुरई को जाता है। अमेरिकी सरकार ने उन्हें इलेक्ट्रॉनिक मेल के लिए कम्प्यूटर प्रोग्राम के आविष्कारक के तौर पर 30, अगस्त 1982 को आविष्कारक की मान्यता दी थी।

न्यूजर्सी स्थित लिविंगस्टन हाईस्कूल से पढ़ाई के दौरान यूनिवर्सिटी ऑफ मेडिसन एंड डेन्टिस्ट्री के लिए अच्यादुरई ने ई-मेल प्रणाली पर काम शुरू किया था। इस काम में 1978 में कामयाबी मिली और पूरी तरह इंटर ऑफिस मेल प्रणाली विकसित की। इसे उन्होंने 'ई-मेल' नाम दिया और 1982 में कॉपीराइट कराया। उस समय कॉपीराइट पेटेंट के ही समान था क्योंकि सॉफ्टवेयर के आविष्कार सुरक्षा के लिए दूसरा तरीका नहीं था। अच्यादुरई अपने काम के आधार पर 1981 में हाईस्कूल सीनियरों के लिए वेस्टिंगहाउस विज्ञान प्रतिभा खोज अवार्ड जीता था। 'ई-मेल' को मिला अधिकारिक अमेरिकी नोटिस अब स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन नेशनल म्यूजियम ऑफ अमेरिकी हिस्ट्री के पास है।

अच्यादुरई ई-मेल के आविष्कार के समय महज 14 साल के थे। उनके ई-मेल के इनबॉक्स, आउटबॉक्स, फोल्डर, मेमो, अटैचमेंट जैसी सुविधाएं थीं। ये सुविधाएं साथ ही साथ ई-मेल प्रणाली का अहम हिस्सा हैं।

हालांकि आविष्कार के लिए अच्यादुरई के दावे ने कम्प्यूटर तकनीक के इतिहास में विवादों को जन्म दिया क्योंकि दूसरे लोग भी ई-मेल का आविष्कार करने का दावा कर रहे हैं। ●

### ज्वालामुखी क्यों फूटता है?

भू-वैज्ञानिकों के अनुसार पृथ्वी के भूगर्भ में अत्यधिक उच्च तापमान होने के कारण सभी पदार्थ पिघली अवस्था में पाए जाते हैं। उन्हें 'मैग्मा' कहते हैं। भू-पर्फटी पर यदि कहीं कोई कमजोर क्षेत्र होता है तो 'मैग्मा' उसे तोड़कर बाहर निकलने लगता है। इस भूगर्भिक क्रिया को ज्वालामुखी क्रिया कहते हैं।

भू-पर्फटी पर निसूत (फैले) 'मैग्मा' को लावा कहते हैं। भू-पर्फटी पर जिस विवर (दरार / मुख) से लावा, राख तथा आग आदि निकलते हैं, उसे ज्वालामुखी कहते हैं।

प्रस्तुति : विपिन कुमार



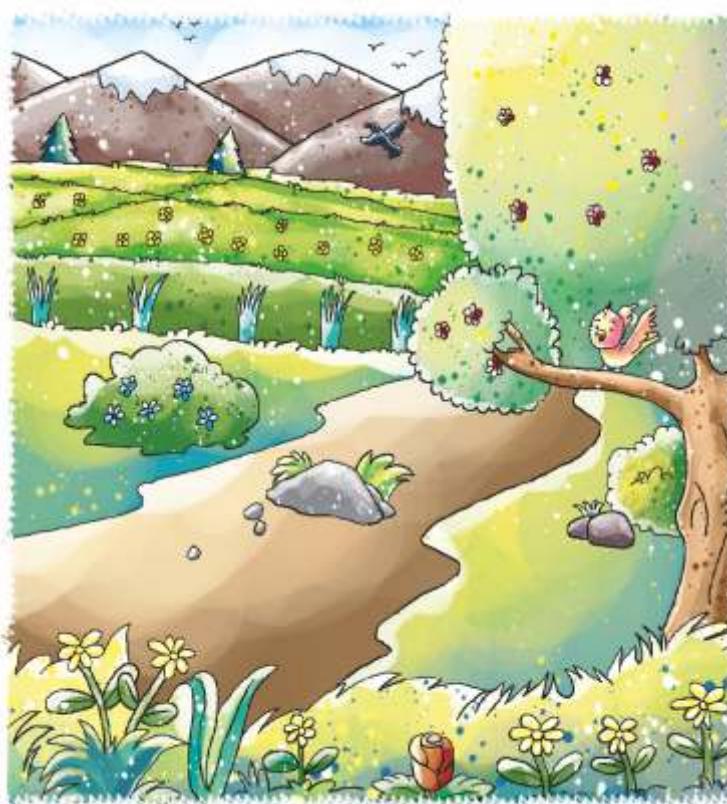
दो बाल कविताएँ : हरजीत निषाद

## आया प्रिय

### ऋतुराज बसंत

आया प्रिय ऋतुराज बसंत,  
सुगंध फैली है दिग् दिगंत।  
पिघली बर्फ पहाड़ों पर,  
सर्दी का भी हो गया अंत।

पक्षी चहके भालों पर,  
भौंरे बैठे फूलों पर।  
मोहक महक उठी कलियों से,  
कुदरत बन गई जादूगर।  
  
बौरों से लद गए हैं आम,  
मादक गंध अरूप अनाम।  
कोंपल हरी भरी शाखों पर,  
सरसों फूली महकी शाम।



## बईमानी हमें न भाती



देश हमारा हरिश्चंद्र का,  
सत्य हमारे रक्त में है।  
नैतिकता की गाढ़ी पूंजी,  
हर एक देशभक्त में है।

शांति दूत भारत भूमि,  
यह सबको गले लगाती है।  
दया प्रेम करुणा की शिक्षा,  
सबको देती जाती है।

बईमानी हमें न भाती,  
निष्ठा हमको प्यारी है।  
डगर सत्य की हमने पकड़ी,  
ऊँची सोच हमारी है।





जानकारीपूर्ण लेख : कैलाश जैन एडवोकेट

## बहुत उपयोगी है ऊंट!

**रेगिस्तान** का नाम सुनते ही 'मृग मरीचिका' के अतिरिक्त कोई शब्द याद आता है तो वह है— ऊंट। मरुस्थलीय क्षेत्रों की जीवन शैली में ऊंट को अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। रेगिस्तान में जहाँ किसी भी प्रकार के वाहनों का प्रयोग तकरीबन नामुमकिन है, वहाँ सवारी के लिए और बोझा ढोने के लिए ऊंट का कोई विकल्प नहीं है। इसके अलावा ऊंट खेती के काम में प्रयुक्त होता है। रेगिस्तान के सैकड़ों फीट गहरे कुओं से पानी खींचकर यह लोगों की प्यास बुझाता है। मरुस्थल में इसकी कारगर भूमिका के कारण ही इसे 'रेगिस्तान का जहाज' कहा जाता है।

शारीरिक बनावट के नजरिये से ऊंट की गणना खूबसूरत पशुओं में नहीं की जाती किन्तु इसके साथ 'सूरत नहीं, सीरत देखिये जनाब' वाली कहावत चरितार्थ होती है। कुदरत ने ऊंट को लम्बी मजबूत गद्दीदार टांगे बख्ती हैं, जो मुलायम होने के साथ ही एक खासतौर की बनावट की बनी होती हैं। चलते समय इसके पैरों की गद्दियां फैल जाती हैं, जिससे पैर रेत में धंसते या फिसलते नहीं हैं। इसी वजह से ऊंट आग के समान जलती—तपती रेत में भी बड़ी आसानी से मीलों लम्बी यात्रा कर लेता है।



इसके कान शरीर के अनुपात में काफी छोटे होते हैं किन्तु श्ववण शक्ति कमजोर नहीं होती है। ऊंट की खोपड़ी छोटी होती है। जबड़े लम्बे और मजबूत होते हैं। भीतरी जबड़े काफी चौड़े होते हैं। मरुस्थल की तपती गर्म रेत पर बिना किसी विकलता के यह चलता जाता है और लटकती हुई पलकों से अपनी आंखें मूंद लेता है। जब रेगिस्तान में तेज रेतीली आंधियां चलती हैं तो ऊंट अपने बड़े—बड़े नथुनों को कसकर बंद कर लेता है ताकि रेत नाक में नहीं घुस सके। इसकी आंखें अपेक्षाकृत छोटी होती हैं।

ऊंट की शारीरिक स्थिति कुछ ऐसी है कि वह बिना कुछ खाये पीये रेगिस्तान में लम्बी यात्रा कर सकता है। लम्बे सफर पर निकलने से पूर्व इसको खूब जमकर पेट—भर चारा पानी खिलाया जाता है तथा बहुत अधिक पानी पिलाया जाता है। यह इतना खाता है कि इसकी पीठ पर करीब चालीस पैंतालीस किलोग्राम चर्बी का कूबड़ उभर आता है। यह वसा या चर्बी का कूबड़ ऊंट के भोजन और शक्ति का भंडार होता है।

इसका शरीर यात्रा के दौरान बाहर से कुछ खाना नहीं मिलने पर कूबड़ में एकत्रित चर्बी को ही भोजन के रूप में ग्रहण करता रहता है। लम्बी यात्रा की समाप्ति पर ऊंट का कूबड़ सिकुड़ कर एक तरफ लटक जाता है। जो इस बात का संकेत है कि शरीर ने कूबड़ की सारी चर्बी भोजन के रूप में सोच ली है। इसके पश्चात् फिर से ताकत जुटाने के बास्ते ऊंट को लम्बे विश्राम की जरूरत होती है।

ऊंट के बारे में एक भ्रांति काफी समय से फैली हुई है कि उसके आमाशय से सटी एक जल की थैली होती है, जिसमें वह पानी भरकर रेगिस्तान में कई दिनों तक बिना पानी पिये यात्रा कर सकता है लेकिन ताजा वैज्ञानिक अनुसंधानों

ने इस बात को गलत साबित कर दिया है। वस्तुतः ऊंट के रक्त में अलबियमैन नामक पदार्थ काफी मात्रा में पाया जाता है। इस पदार्थ की अधिकता के कारण पानी नहीं मिलने की स्थिति में भी उसके शरीर और रक्त में पर्याप्त मात्रा में पानी बना रहता है। ग्रीष्म ऋतु में सभी जानवरों के शरीर से पसीना निकलता है किन्तु ऊंट के साथ ऐसा नहीं होता। उसे पसीना नहीं आता, इसी कारण ऊंट को भरी गर्मी में भी प्यास नहीं सताती।

ऊंट का भोजन मुख्यतया कंटीली झाड़ियां, पेड़ों की पत्तियां, घास, बबूल की नाजुक डालियां आदि हैं। आमतौर पर ऊंट शाकाहारी होता है।

ऊंट को बुद्धिमान पशुओं की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता है। यह कभी कोई नई बात सीखने या नवीन परिस्थितियों को समझने का प्रयास नहीं करता। ऊंट मूलतः प्रतिशोधी व क्रोधी स्वभाव का जानवर है जो साधारण—सी बात पर क्रुद्ध होकर बदला लेने पर उतारु हो जाता है।

मिस्र के लोग तीन हजार वर्षों से भी पहले से सवारी के लिए ऊंट का इस्तेमाल करते थे। आज भी अधिकांश रेगिस्तानी इलाकों में सवारी के अतिरिक्त बोझा ढोने और डाक व्यवस्था का काम भी ऊंट से ही लिया जाता है। राजस्थान की कौलायत तहसील में सन् 1977 में 'ऊंट डाक सेवा' शुरू की गयी। ऊंट पर यह चलता फिरता डाकघर मरुस्थलीय क्षेत्रों में गाँव—गाँव घूमकर डाक बांटने, रजिस्ट्री, मनीआर्डर पहुँचाने और बचत खाते खोलने का कार्य करता है।

मशहूर मुगल बादशाह अकबर ऊंटों में बहुत दिलचस्पी रखते थे। उनकी ऊंटशाला में कई

किस्मों के हजारों ऊंट थे। उनकी देखभाल के लिए कई कारिन्दे तैनात थे। विशेष अवसरों पर ऊंट को रेशम, जरी, गोटा आदि से सजाया जाता था।

युद्धों में भी ऊंट की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। रावण द्वारा युद्ध में ऊंटों के उपयोग का ब्यौरा धार्मिक ग्रंथों में मिलता है। सन् 1900 के चीन युद्ध, सन् 1903 के सोमालीलैंड युद्ध तथा दोनों महायुद्धों के समय बीकानेर राज्य की 'केमलकोर' ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी। सन् 1948 में जैसलमेर रिसाला के नाम से दूसरी ऊंट बटालियन बनाई गयी। सन् 1954 के बाद ऊंटों की इस बटालियन को 13 ग्रेनेडियर्स का नाम दिया गया। इसने सन् 1965 व 1971 के भारत—पाकिस्तान युद्ध के समय देश की अतुलनीय सेवा की।

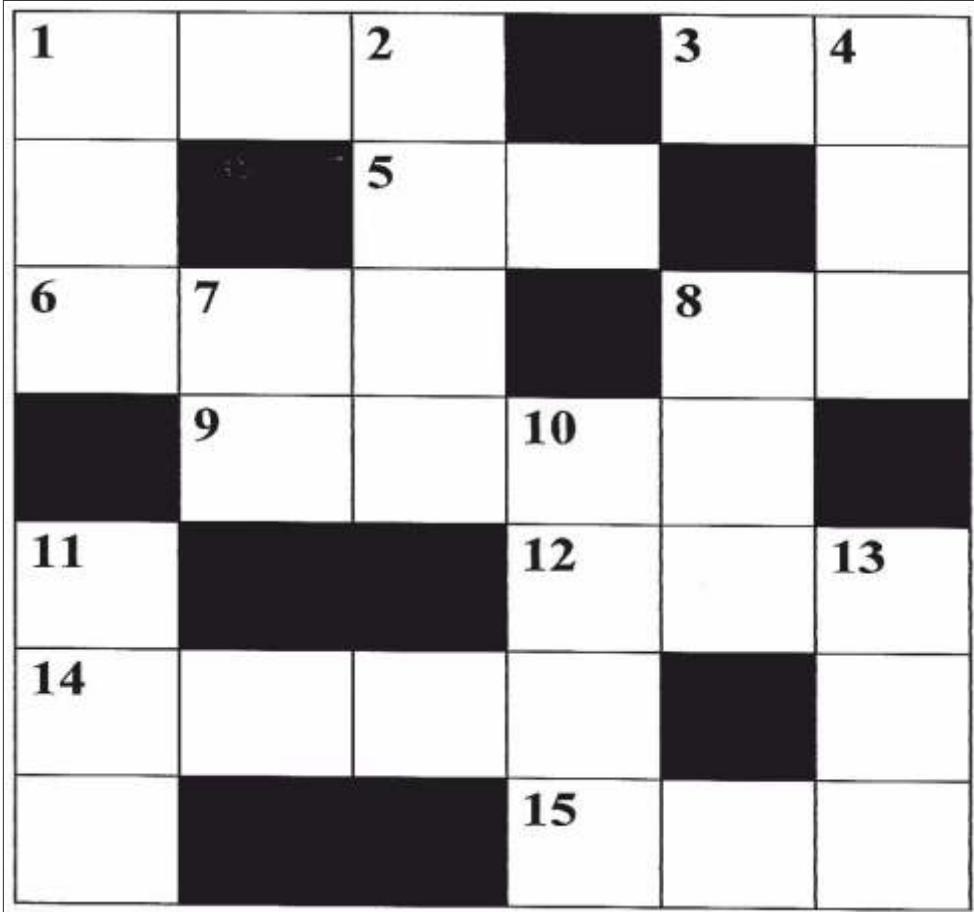
हमारे देश में वर्तमान में करीब पन्द्रह लाख से अधिक ऊंट हैं, जिनमें से आधे राजस्थान में हैं। भारत में मुख्यतः बीकानेर व जैसलमेरी नस्ल के ऊंट श्रेष्ठ माने जाते हैं, जो वजन के हल्के और शक्ति और दौड़ने की दृष्टि से तेज होते हैं।

राजस्थान में बीकानेर जिले के जोड़बीड़ में एक शासकीय ऊंट प्रजनन केंद्र है, जो भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा स्थापित किया गया है। यहाँ ऊंटों की नस्ल सुधारने संबंधी प्रयोग व अनुसंधान किये जाते हैं।

ऊंट मरने के बाद भी अपनी उपयोगिता बरकरार रखता है। इसकी खाल से सुन्दर चित्रकारी युक्त कुप्पियां बनाई जाती हैं। इसका चमड़ा जूते, वस्त्र, पर्स आदि बनाने के काम में आता है तथा हड्डियों का भी विविध कार्यों में उपयोग किया जाता है।



# वर्ग पहेली



## बाएं से दाएं →

- किस देश की राजधानी मैक्रिस्को सिटी है?
- मामी के ससुर।
- रावण ..... का राजा था।
- घोड़े की काठी का झूलता पायदान।
- इस पंक्ति में छुपे एक रंग का नाम ढूँढ़िए : एक गिलास पानी लाकर देना।
- .... भट्टी एक प्रसिद्ध हास्य अभिनेता थे।
- सी.वी. ..... को भौतिक शास्त्र में उनकी खोज 'रमन प्रभाव' के लिए नोबेल पुरस्कार मिला।
- मृत्यु के देवता यमराज का लोक।
- सन्धि कीजिये : रमा + इन्द्र।



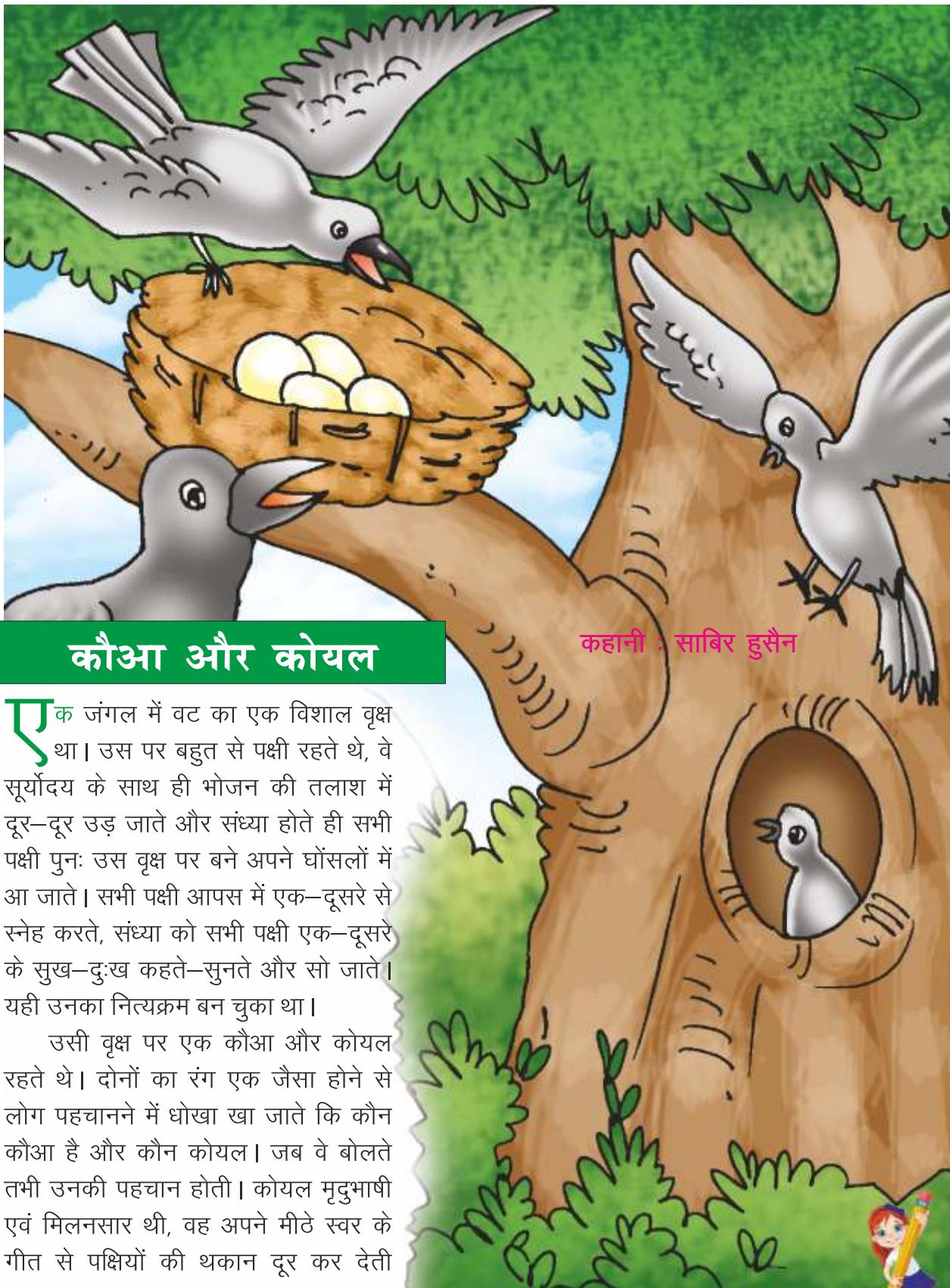
20

हँसती दुनिया || फरवरी 2017

## ऊपर से नीचे ↓

- मैसूर और शिमला में से जिस जगह का राजा टीपू सुल्तान था।
- अमरीका की खोज क्रिस्टोफर ..... ने की।
- बेमेल शब्द छांटिए : नाथुला, नासिक, आगरा, भोपाल।
- एक पंथ दो ..... यानि एक ही बार में दो काम करना।
- ज्ञानी जैल सिंह से पहले भारत के राष्ट्रपति .... संजीव रेड्डी थे।
- एक प्रसिद्ध फ्रॉन्टियर बालपॉइंट पेन?
- जलियांवाला बाग हत्याकांड के लिए जनरल .. ... जिम्मेदार था।
- स्वामी विवेकानन्द के बचपन का नाम।

(वर्ग पहेली के उत्तर इसी अंक में हैं)



## कौआ और कोयल

कहानी : साबिर हुसैन

एक जंगल में वट का एक विशाल वृक्ष था। उस पर बहुत से पक्षी रहते थे, वे सूर्योदय के साथ ही भोजन की तलाश में दूर-दूर उड़ जाते और संध्या होते ही सभी पक्षी पुनः उस वृक्ष पर बने अपने घोंसलों में आ जाते। सभी पक्षी आपस में एक-दूसरे से स्नेह करते, संध्या को सभी पक्षी एक-दूसरे के सुख-दुःख कहते-सुनते और सो जाते। यही उनका नित्यक्रम बन चुका था।

उसी वृक्ष पर एक कौआ और कोयल रहते थे। दोनों का रंग एक जैसा होने से लोग पहचानने में धोखा खा जाते कि कौन कौआ है और कौन कोयल। जब वे बोलते तभी उनकी पहचान होती। कोयल मृदुभाषी एवं मिलनसार थी, वह अपने मीठे स्वर के गीत से पक्षियों की थकान दूर कर देती



किन्तु जब कौआ बोलता कांव—कांव ही करता, उसका स्वर भी कर्कश था। उसका स्वभाव अत्यन्त क्रूर था। वह सदैव अपने स्वार्थ में लगा रहता। वह सदैव सोचता कि किसी तरह सारे संसार में कौए ही कौए दिखाई दें, चारों दिशाओं में कौओं की कांव—कांव ही सुनाई दे। उसके इसी स्वभाव के कारण कोई पक्षी उससे मित्रता करना पसन्द नहीं करता परन्तु उसके हर समय सतर्क रहने की आदत की सभी पक्षी मुक्त कंठ से प्रशंसा भी करते।

कौए को कोयल का गीत फूटी आंख न सुहाता। वह प्रत्येक क्षण सोचा करता कि किसी तरह कोयल का वंश ही समाप्त हो जाए तो चारों ओर कौए ही कौए दिखाई पड़ने लगें।

एक दिन कौआ डाल पर बैठा कांव—कांव कर रहा था तभी उसके दिमाग में एक योजना आ गई कि यदि वह कोयल के अण्डे नष्ट कर

दे तो कोयल का वंश समाप्त हो जाएगा। कौआ अपनी योजना पर बड़ा प्रसन्न हुआ और वह कोयल के अण्डे देने के समय की बेसब्री से प्रतीक्षा करने लगा।

ऋतुएं आई गई और समय पर कोयल ने अण्डे दिये। सभी पक्षियों ने उसे बधाई दी। कोयल खुशी से कू—कू करती उड़ गई। दूसरी ओर कौआ पक्षियों के जाने की प्रतीक्षा कर रहा था, पक्षियों के जाते ही वह तुरन्त कोयल के घोंसले पर जा पहुँचा और उसके सारे अण्डे गिरा कर नष्ट कर दिये और अपनी सफलता पर खुश होता हुआ उड़ गया।

कोयल जब शाम को वापस घोंसले पर लौटी तो अपने अण्डों को जमीन पर फूटे पड़े देख बहुत दुःखी हुई। अन्य पक्षी जब वापस लौटे तो वे भी इस दुर्घटना से बड़े दुःखी हुए। उन्होंने कोयल को सांत्वना दी किन्तु कौआ दूर बैठा कांव—कांव ही करता रहा।



दूसरी बार कोयल ने पुनः अण्डे दिये तब कोयल पत्तों में छुपकर बैठ गयी। जब उसने कौए को अण्डों को फोड़ते देखा तो सामने आ गई और बोली— कौए भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम मेरे अण्डों को फोड़ रहे हो।

—इस धरती पर सिर्फ कौए ही रहेंगे, तुम क्या मैं सभी पक्षियों को मार डालँगा— कहते हुए कौए ने अन्य पक्षियों के अण्डे—बच्चों को नष्ट करने लगा।

कोयल इस नृशंस हत्याकांड की सूचना देने उड़ गई और थोड़ी देर में सभी पक्षी आ गए, इस बीच कौए ने भी दूसरे कौओं को बुला लिया। जमकर संघर्ष हुआ, जिसमें नहें पक्षियों की कौओं के आगे एक न चली। उनमें बहुत से घायल हुए और मारे गये। तब पक्षियों ने उस वटवृक्ष को छोड़ दिया। वे दूसरे पेड़ों पर जाकर बस गये तथा स्वयं अपने अण्डे—बच्चों की रक्षा करने लगे। फिर जैसे ही कौए को अवसर मिलता वह पक्षियों के अण्डे नष्ट कर देता और बच्चों को मार देता। वह विशेष रूप से कोयल के अण्डे—बच्चों को मारता।

कोयल ने जब देखा कि कौआ सदैव उसके वंश को नष्ट करने में लगा रहता है तो उसने एक युक्ति सोच ली। जब उसके अण्डे देने का समय आया तो वह कौए के घोंसले पर चली गई। उसने वहाँ रखे कौए के अण्डों के साथ ही अपने अण्डे रखकर उड़ गई।

कौआ अपने अण्डों के साथ ही कोयल के अण्डों को भी सेता रहा। जब अण्डों से बच्चे निकले तो वे भी काले होने के कारण कौआ उन्हें पहचान न सका और उनका पालन—पोषण करता रहा। कोयल दूर से अपने बच्चों को देखती और खुश होती। लेकिन जब बड़े हुए तो कौए को बड़ा आश्चर्य हुआ कि जिन्हें वह अपने बच्चे समझ रहा था वे कोयल के बच्चे थे। कौआ उन्हें मारने झपटा तो बच्चे पंख फड़फड़ाकर उड़ गये और आम की डाल पर बैठी कोयल के पास जाकर कू—कू करने लगे। कौआ गुस्से से कांव—कांव करता रह गया।

कोयल आज भी पुरानी युक्ति का प्रयोग कर कौए के घोंसले में अण्डे देती है और अपने बच्चों का पालन—पोषण कौए से कराती है। ●



## पहेलियाँ

1. हरी डण्डी हरा सामान,  
तौबा तौबा करे जान ।
2. डिब्बे के न पांव हाथ,  
करता है बहुत बात ।
3. जादू की डिब्बिया ली हाथ,  
करें लाख की एक में बात ।  
कभी मैं बोलू कभी वो बोले,  
वो बुद्धू जो भेद ना खोले ॥
4. उसके सिर लिपटा है जूट,  
उसको कहते लोग फ्रूट ।
5. देखा एक प्रभु का जलवा,  
बाहर छिलका अन्दर हलवा ।
6. एक महल में नौ दस परी,  
आपस में सिर लगाकर खड़ी ।  
जब भी खुलता है द्वार,  
खा लेते हैं बिना इन्तजार ॥
7. हरा—पीला,  
मगर पेट में काले अण्डे ।  
मेरा नाम बताओ,  
नहीं तो पड़ेंगे दस डण्डे ॥
8. रुकना मेरा नाम नहीं,  
चलते रहना ही मेरी शान ।  
जो मेरे संग चलता,  
वो बन जाता महान ॥
9. गोल—गोल मोटी—मोटी,  
सबको मैं जीवन देती ।  
आती हूँ खाने के काम,  
सोचकर बताओ तो मेरा नाम ॥
10. मुझसे पाते सभी शिक्षा का ज्ञान,  
बच्चे, बूढ़े हो या जवान ।
11. आती हूँ तो हाहाकार मच जाता,  
तन से खूब पसीना बहता ।
12. आता हूँ मैं लिखने के काम,  
मेरे बिना चले न काम ।

(पहेलियों के उत्तर  
किसी अन्य पृष्ठ पर देखें)





बाल कहानी : राधेलाल 'नवचक्र'

## समय पर उचित साहस

यह तब की बात है। जब फ्रांस का राजा लुई था। क्रान्तिकारी परिषद के सामने उस पर मुकदमा चल रहा था, जो मात्र दिखावा और नाटक था। राजा के पूरे परिवार को मृत्यु-दण्ड देने का निर्णय पहले ही निश्चित हो चुका था।

सारी स्थिति को अच्छी तरह जानते हुए भी राजपरिवार ने चल रहे मुकदमें में अपना बयान देना चाहा। यही नहीं, मुकदमें की

पैरवी भी करने की दृढ़ता दिखायी। मगर कोई भी वकील राजा की ओर से वकालत करने के लिए तैयार नहीं हुआ। राजपरिवार की वकालत करने का सीधा अर्थ था— क्रान्तिकारी परिषद की नजर में चढ़ जाना एवं मृत्यु-दण्ड को न्यौता देना क्योंकि यह बिल्कुल साधारण—सी बात थी उस समय राजभक्त होने की आशंका मात्र से जान जाने का खतरा था।



ऐसे में काफी खोज के बाद राजघराने को अपने मुकदमे की वकालत करने के लिए एक वकील मिल ही गया। वह था— लौगार्ड।

खतरा मोल लेकर लौगार्ड ने रानी और बच्चे को निर्दोष सिद्ध करने में अपना पूरा जोर लगा दिया, किसी प्रकार की कमी नहीं रहने दी। मगर नतीजा वही निकला, जो पहले ही निश्चित हो चुका था अर्थात् राजघराने के सभी सदस्यों को मृत्यु-दण्ड।

लौगार्ड ने किसी लोभ-वश राजपरिवार की वकालत करने का खतरा मोल लिया था, ऐसी बात भी नहीं थी। वह अच्छी तरह जानता था कि राजकोष पहले ही जब्त कर लिया गया है।

फैसला जो भी हुआ, रानी को उसकी चिन्ता नहीं थी। हाँ, उसे इस बात का आत्मसंतोष जरूर था कि इस प्रतिकूल परिस्थिति में उसकी ओर से वकालत करने का किसी ने सही समय पर उचित साहस तो दिखाया। अब रानी के समक्ष वकील को फीस देने की समस्या उठ खड़ी हुई। रानी ने अपना बटुआ लौगार्ड के हाथ पर रखा।

सभी को उत्सुकता थी कि उसमें क्या है?

लौगार्ड ने सबके सामने बटुआ खोला, उसमें रानी के बालों की लट थी, साथ ही कृतज्ञता से भरे हुए आँसू।

उसे अच्छी तरह सहेज कर लौगार्ड ने रख लिया। उसे खुशी थी कि उसने उचित साहस दिखाकर अपने पेशे की पवित्रता की रक्षा कर ली। अब इसका नतीजा कल जो भी हो।



हँसती दुनिया परिवार की ओर से

## जन्मदिन की शुभकामना



शुभ (पहाड़गंज दिल्ली) सुहावनी (पहाड़गंज दिल्ली) विदित (गाणे)



निखिल (खीरी) लतिका (अहमदाबाद) सहजता (इलाहाबाद)



गौरव (छिन्दवाड़ा) नंदिनी (मुंबई) हरमीत (मुक्तसर)



अभिषेक (हरखाईतपुर) कुणाल (मुंबई) प्रकाश कुमार (बीना)



आकाश (रीवा) अक्षित (पीलीबंगा) कनिका (पीलीबंगा)

कविता : राजीव कुमार

## फूल से बातें

अम्बर में उड़ता है पंछी  
मछली जल में तैर रही,  
फूल खिला है एक बाग में  
तितली ने यह बात कही।

आओ चलकर बाग में देखें  
फूल में कितने रंग भरे,  
बाग में पहुँचे तो फिर देखे  
सारे पत्ते हरे—भरे।

कांटों में एक फूल खिला था  
लाल—गुलाबी रंग लिए,  
सोचा लौटेंगे अब घर पर  
इसको अपने संग लिए।



कांटों ने था खूब छकाया  
फूल हाथ में न आया,  
फूल को डाली में रहने दो  
हमने मन को समझाया।

भीनी—भीनी फूल की खुशबू  
हमको खूब रिझाती थी,  
पेड़ के नीचे छाया भी थी  
नीद हमें तो आती थी।

हरी—हरी जो धास उगी थी  
उस पर हम सब सोए थे,  
नीद में फूल से बतियाने में  
हम तो पूरे खोए थे।





लेख : कैलाश जैन, एडवोकेट

## जब सारे संसार पर था डायनासोर का सम्राज्य

**'डायनासोर'** नामक विशाल प्राणी पृथ्वी के इतिहास में करीब चौदह करोड़ बरसों तक इस दुनिया का बेताज बादशाह बनकर रहा। वह आज से कोई साढ़े छह करोड़ साल पहले इस संसार से अचानक लुप्त हो गया।

अचरज की बात यह है कि आदमी ने डायनासोर को इस धरती पर एकछत्र राज्य करते नहीं देखा। और न ही उसने उसे यूं अचानक गायब होते देखा। आदमी तो उसके विलुप्त हो जाने के करोड़ों बरसों बाद इस धरती पर आया। डायनासोर के बारे में आदमी की जानकारी का एक मात्र स्रोत है— इन प्राणियों के जीवाश्म अर्थात् इनकी पथराई हुई अस्थियां, अंडों के जीवाश्म तथा इनके द्वारा छोड़े गये अन्य चिन्ह।



'डायनासोर' मूलतः अंग्रेजी शब्द है, जिसका अर्थ है विशालतम छिपकली। इस शब्द का सर्वप्रथम उपयोग सन् 1842 में सर रिचर्ड ओवन द्वारा किया गया था। डायनासोर 'सरीसृप—वर्ग' के प्राणी थे। इस वर्ग में रेंगने वाले जीव जैसे छिपकली, सांप, मगरमच्छ आदि आते हैं। डायनासोर इस वर्ग की पूर्णतया विलुप्त प्रजाति है। अब इस प्रजाति के प्राणियों के अवशेष भूगर्भशास्त्रियों द्वारा की जा रही खोजों व खुदाई के समय कभी—कभी प्राप्त होते हैं।

आज हमारी पृथ्वी पर उपलब्ध जीवों में हाथी तथा घोले मछली ही सर्वाधिक विशालतम प्राणी हैं, लेकिन डायनासोर ऐसे जीव थे, जिनके समक्ष हाथी, ऊँट जैसे प्राणी बहुत बौने लगते थे। 'ब्रान्कियोसोरस' नामक जाति के डायनासोरों की लम्बाई लगभग 120 फीट तक होती थी। इसके अलावा 'डिप्लोडोक्स' नामक डायनासोर 100 फीट लम्बा और 10 टन वजनी होता था। इसके नथुने इसके सिर के ऊपरी भाग पर स्थित होते थे। 'ब्रोप्टोसोरस' की लम्बाई 70 फीट तथा वजन 7 टन होता था। 'टाइनोसोरस' की लम्बाई 500 फीट तक होती थी। यह डायनासोर आमतौर पर 25 से 30 फीट ऊँचे होते थे तथा इनका औसत वजन 50 से 60 टन तक होता था।

'ब्रांकियोसोरस' नामक एक अन्य डायनासोर अत्यंत खतरनाक किस्म का प्राणी होता था, जो 80 फीट लम्बा व 45 फीट चौड़ा

होता था और इसका वजन 100 टन से भी ज्यादा होता था। अन्य डायनासोर के विपरीत इसकी अगली टांगे पिछली टांगों के मुकाबले अधिक लम्बी होती थीं। काफी लम्बी गर्दन वाला यह जीव गहरे पानी में रहना पसन्द करता था।

'ब्रोप्टोसोरस' और 'डिप्लोडोक्स' प्रजाति के डायनासोरों की गर्दन तथा दुम कई फीट लम्बी होती थी। शरीर के अनुपात में इनकी टांगें काफी छोटी होती थीं। टायनोसोरस तथा इगुसानोडन की शारीरिक बनावट का जीवन्त उदाहरण आधुनिक युग का कंगारू है। इसकी पिछली टांगें आगे की टांगों से अधिक मजबूत होती थीं। सात सींगों वाला डायनासोर 'स्टाइराकोसोरस' अत्यंत भयंकर और वीभत्स प्राणी था। इनकी गर्दन के चारों तरफ छह सींग तथा एक सींग नाक के ऊपर होता था।

अफ्रीका में खुदाई में मिले 'ब्रांकियोसोरस' डायनासोर के कंकाल की लम्बाई 23 मीटर तथा कंधे की लम्बाई 6 मीटर होती थी। इसका सिर करीब 12 मीटर की ऊँचाई पर होता था तथा वजन करीब 75 टन के आसपास रहा होगा।

धरती पर डायनासोर की पीढ़ी का आखिरी प्रतिनिधि 'टाइरेनोसोरस' रहा होगा। यह अब तक का सर्वाधिक विशालकाय दोपाया जानवर था।

डायनासोर अपनी विशालता के लिए विख्यात है किंतु कुछ डायनासोर बिल्कुल छोटे भी थे। कुछ डायनासोर तो इस कदर

कमजोर थे कि स्तनपायी जीव आसानी से उनका शिकार कर लेते थे।

'प्रोंकोपंसोसोन्येथस' नामक डायनासोर की लम्बाई केवल 3-4 फीट होती थी, इसी प्रकार 'जुरासिक' व 'क्रिटेशियस' नामक डायनासोर 5 से 7 फीट तक लम्बे होते थे।

चार पैरों से चलने वाले डायनासोरों में डिप्लोडोक्स, ब्रोटोसारस आदि प्रमुख थे। पिछले दो पैरों पर चलने वाले डायनासोरों में एलोसारस, टायनोसारस आदि प्रजातियों के डायनासोर शामिल थे।

डायनासोरों की कुछ प्रजातियां शाकाहारी थीं तथा कुछ मांसाहारी। ब्रोकियोसोरस वर्ग के डायनासोरों के दांतों का अध्ययन करने से यह ज्ञात हुआ है कि कुछ किस्मों के डायनासोरों को छोड़कर अधिकांश डायनासोर शाकाहारी थे। अपनी लम्बाई के कारण यह आसानी से ऊँचे-ऊँचे पेड़ों से पत्ते डालियां आदि खा सकते थे। कांपसौग्रंथस एंटेडिमस आदि डायनासोर मांसाहारी थे। ये अन्य जीवों का शिकार कर अपना पेट भरते थे।



शारीरिक संरचना की दृष्टि से विभिन्न प्रकार के डायनासोरों में अनेक विभिन्नताएं अवश्य थीं किंतु कुछ बातें समान रूप से भी पाई जाती थीं। जैसे शरीर के अनुपात में सभी डायनासोरों का कपाल बहुत छोटा होता था। इसी तरह सभी डायनासोरों का दिमाग अत्यंत छोटा होता था। इनके दिमाग का आकार मटर के दाने से मुर्गी के अण्डों के आकार जैसा होता था। कई प्रकार के डायनासोरों में तो दो-दो दिमाग भी पाये जाते थे। टिप्सराटाप नामक डायनासोर का दिमाग सबसे बड़ा होता था, जिसका अधिकतम भार एक किलोग्राम तक होता था।

अधिकांश डायनासोर पानी के पास जमीन पर या कीचड़ में रहते थे। कुछेक डायनासोर अपने भारी भरकम शरीर के कारण धरती पर चलने में दिक्कत का अनुभव करते थे। इस कारण उन्होंने जल में शरण ली। मगरमच्छ, छिपकली और घड़ियाल की तरह डायनासोर भी अंडे देने वाला प्राणी था। इनके अंडे इनके

शरीर की तुलना में छोटे होते थे। अंडे देने से पूर्व यह आधा फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ाई का गड़ा खोदते थे। अंडे देने के बाद डायनासोर वहाँ से चले जाते थे और अंडों से उनके बच्चे स्वयमेव बाहर निकल आते थे।

डायनासोर के पृथ्वी से विलुप्त हो जाने के संबंध में कई धारणाएं प्रचलित हैं। नोबेल पुरस्कार विजेता अमेरिकी वैज्ञानिक डॉक्टर लुईस अल्वारेज के मतानुसार एक ग्रह के पृथ्वी से टकरा जाने से हुए प्रदूषण से यह जाति लुप्त हो गई। कुछ वैज्ञानिकों की मान्यता है कि अपने विशालकाय आकार के कारण यह जीव परिस्थितियों से सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाए और नष्ट हो गए। वैसे आमतौर पर यह धारणा है कि आज से पांच-छह करोड़ वर्ष पूर्व पृथ्वी पर हिमयुग के प्रारम्भ से मौसम में भारी परिवर्तन हुआ और सम्पूर्ण पृथ्वी पर पानी जम गया तथा बर्फीली आंधियां चलने लगीं। डायनासोर को अपने विशाल शरीर के अनुसार वनस्पति आदि खाने को नहीं मिली।



फलस्वरूप वे भूख के कारण मरने लगे। इस प्रकार भोजन के अभाव एवं वातावरण में असंतुलन के कारण डायनासोर पृथ्वी से विलुप्त हो गये। ●

वैज्ञानिक जानकारी : डॉ. घमंडीलाल अग्रवाल



## विज्ञान प्रश्नोत्तरी

**प्रश्न :** रोगियों को अस्पताल ले जाने वाले वाहनों पर एम्बुलेंस (AMBULANCE) शब्द उल्टा क्यों लिखा जाता है?

**उत्तर :** रोगियों अथवा दुर्घटनाग्रस्त व्यक्तियों को प्राथमिक चिकित्सा तथा उपचार हेतु तुरन्त अस्पताल पहुँचाना आवश्यक होता है ताकि उनकी जीवन—लीला समाप्त होने से बचाई जा सके। इस उद्देश्य से जो वाहन प्रयोग में लाए जाते हैं, उनके सामने की तरफ एम्बुलेंस (AMBULANCE) शब्द उल्टा लिखा जाता है।

जानते हो ऐसा क्यों होता है? इसका कारण यह है कि सामने वाले चालक के पास लगे दर्पण में इसका सीधा प्रतिबिम्ब बन सके और यह बात स्पष्ट हो जाए कि पीछे से एम्बुलेंस आ रही है और उसे रास्ता (side) दे दें। यहाँ तक कि लाल बत्ती (Red Light) पर भी इन वाहनों को रोकना मना है।

**प्रश्न :** रंगीन कपड़े धोकर धूप में क्यों नहीं सुखाये जाते हैं?

**उत्तर :** प्रकाश, रासायनिक क्रिया में सहयोगी कारक है। जब गीले रंगीन वस्त्र सूखने के लिए धूप में फैलाए जाते हैं तो वे धीरे—धीरे अपना रंग व चमक खोने लगते हैं। रंगों का रासायनिक प्रभाव प्रकाश की उपस्थिति में धीमी अभिक्रिया करता है।

**प्रश्न :** फिल्मयुक्त कैमरा अंधेरे में ही क्यों खोला जाता है?

**उत्तर :** फिल्मयुक्त कैमरा सदैव अंधेरे में ही खोला जाता है। यदि फिल्मयुक्त कैमरा प्रकाश की उपस्थिति में खोला जाए तो उसमें पड़ी हुई फोटोग्राफिक फिल्म खराब हो जाएगी जिससे कोई भी फोटो प्राप्त नहीं होगा। फिल्म पर चांदी के आयोडाइड या ब्रोमाइड के घोल लगे होते हैं जो प्रकाश की उपस्थिति में तेजी से क्रिया कर लेते हैं।

**प्रश्न :** चूने को जल में डालने पर सांय (Hissing) की आवाज क्यों उत्पन्न होती है?

**उत्तर :** चूने को जल में डालने पर सांय की आवाज आती है और काफी मात्रा में गरमी भी उत्पन्न होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि यह नमी से युक्त हाइड्रोजन क्लोराइड गैस (HCl) से क्रिया करता है और उससे कैल्शियम क्लोराइड बनती है।





जानकारी :  
प्रस्तुति : विभा वर्मा

## पुरानी बातें याद रखने वाली कोशिकाएं

**हमारे** शरीर में गुजरी बातों का भी लेखा—जोखा होता रहता है क्योंकि हमारे मस्तिष्क में लगभग 30,000 तंत्रिका कोशिकाएं पाई जाती हैं। यही कोशिकाएं भूली—बिसरी बातों का हिसाब—किताब रखती हैं। साथ ही ये कोशिकाएं भविष्य के ताने—बाने भी बुनती हैं। ये हमारे जन्म से लेकर

बुढ़ापे तक अपनी अवस्था के अनुरूप याद की धार पैनी करती हैं। ये अपना काम सुगमता से बखूबी करती हैं। पर जब व्यक्ति सिगरेट, बीड़ी, सिगार के कश लेने लगता है तो कश के साथ उसकी स्मृति भी जलती रहती है।

परीक्षण के तौर पर कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय में अनुसंधानकर्ताओं ने पाया कि एक वर्ग को निकोटिन वाली सिगरेट पीने को दी गई और दूसरे वर्ग को बगैर निकोटिन वाली सिगरेट। दो दिन बाद दोनों ही वर्ग की याददाश्त का परिक्षण किया गया तो निकोटिन पीने वालों की याददाश्त में काफी कमी पाई गई। इसके साथ ही मानसिक तनाव, अत्यधिक व्यस्तता, क्रोध, अधिक निद्रा भी हमारी याद को विस्मृत कर देती है। ●

### शरीर के समस्त अवयवों की रक्षा करती है त्वचा

**त्वचा** शरीर के समस्त अवयवों की रक्षा करती है। इसके मुख्यतः दो भाग हैं। बाह्य त्वचा की कोशिकाएं निरन्तर धिसती—मिटती रहती हैं तथा उनकी जगह दूसरी कोशिकाएं आ जाती हैं। सूक्ष्मदर्शी यंत्र द्वारा देखने पर त्वचा में अनेक छोटे—छोटे रोमकूप दिखाई पड़ते हैं। एक वर्ग सें.मी. में 500—600 तक छिद्र होते हैं। प्रत्येक छिद्र सूक्ष्म स्वेद नलिका का मुंह है। यह नलिका दूसरी तरफ स्वेद ग्रंथि से जुड़ी होती है। इसके चारों तरफ सूक्ष्म रक्त—वाहिनियों का जाल होता है। रक्त के साथ अवशिष्ट लवण सोडियम क्लोराइड, कार्बोलिक एसिड आदि विजातीय पदार्थ स्वेद ग्रंथि द्वारा छानकर पसीने के रूप में बाहर निकाल दिये जाते हैं। कभी—कभी ये लवण स्वेद नलिका के मुंह पर जमा होकर अथवा लोशन पाउडर क्रीम आदि लगाने से ये रोमकूप बन्द हो जाते हैं। खुरदरे

रोयेंदार तौलिये से स्पंज करने के बाद स्नान करने अथवा स्नान करते हुए स्पंज करने से रोमकूप साफ हो जाते हैं।

धूप स्नान, शारीरिक श्रम व दौड़ने से तथा गर्भी के दिनों में पसीना निकलता रहता है। अशक्त लोगों को धूप स्नान के दौरान स्पंज करके त्वचा की निष्कासन क्षमता को बनाये रखना चाहिए।

पसीना निकलना शरीर के लिए अति आवश्यक है। पसीने के रूप में शरीर की गन्दगी बाहर निकलती है तथा शरीर का तापमान सामान्य रहता है। प्रायः शरीर से पसीना निकलकर स्वतः उड़ता रहता है। त्वचा में सिबेसियम ग्रंथियां भी होती हैं। जिनसे तैलीय पदार्थ निकलता है। इससे त्वचा मुलायम बनी रहती है। बाल तथा नाखून बाह्य त्वचा के रूप हैं।

प्रस्तुति : ईलू रानी ●





## एक जल जीव का सिटी बजाने का रहस्य....

**आपको** जानकर अचरज होगा कि समुद्र में स्वतंत्र विचरण करने वाली डॉलफिन इंसानों की तरह एक दूसरे को नाम से पुकारती हैं। हाँ, इंसानों की तरह डॉलफिन के भी नाम होते हैं और वे एक दूसरे से बातचीत के दौरान उनके नामों से ही पुकारती हैं।

स्कॉटलैंड में 'बोतलनुमा मुँह वाली डॉलफिन' पर की गई एक स्टडी में पता लगा है कि यह एक दूसरे को बुलाने के लिए विशेष प्रकार की सीटी जैसी आवाज निकालती हैं।

हाँ, यह आवाज सीटी जैसी जरूर लगती है, लेकिन इनके संसार में वह दरअसल एक दूसरों के नाम का संकेत होते हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि यह बिल्कुल इंसानों की तरह है। साथ ही वैज्ञानिकों का दावा है कि इंसानों के बाद नाम की ऐसी प्रक्रिया केवल डॉलफिन में ही मिलती है।

डॉलफिन अपनी श्रेणी के अनुसार एक विशेष तरह की प्रतीकात्मक शैली का इस्तेमाल करती है। जब वैज्ञानिकों ने अलग-अलग श्रेणी की ध्वनियां बजाई तो उसके आधार पर डॉलफिन अलग-अलग इकट्ठा हो गई। इस दौरान वैज्ञानिकों ने पाया कि हर डॉलफिन अपनी विशेष निर्धारित आवाज को पहचानती है और इस पर प्रतिक्रिया देती है। इस

सन्दर्भ में वैज्ञानिकों का मानना है कि यह डॉलफिन की बुद्धिमत्ता को दर्शाता है।

डॉलफिन अपने साथियों को रिझाने या बातचीत करने के लिए अक्सर दोपहर के समय अपने मुख से सिटी जैसा संकेत निकालती है। इस संकेत में कई तरह के सूक्ष्म नाम छिपे होते हैं, लेकिन सिटी के उतार-चढ़ाव, जो एक ध्वनि आधे सेकण्ड के लिए होती है, उस ध्वनि में ही साथी का नाम भी छिपा होता है, साथी अपना नाम सुनते ही बदले में तुरन्त सिटी के जरिये ही अपना सन्देश या संकेत भेज देता है।

समंदर में डॉलफिनों के सिटी बजाने के सिलसिले सांझा तक चलते रहते हैं। इन सिटी संकेतों से ये डॉलफिने आपस में कई तरह की गुपचुप वार्तालाप कर लेती हैं, यदि इस बीच इन्हें कोई खतरा भी महसूस होता है तो ये अपने पूरे समूह को एक विशेष प्रकार की आवाज से अलर्ट कर देती हैं।

डॉलफिन को गुस्सा भी बहुत तेज आता है। समंदर का कोई जीव जब इसके शरीर से छेड़खानी करता है तो ये तेजी से उछलकर समंदर में धड़ाम से गिरती है, इससे आसपास का पानी 25–30 फुट तक ऊपर उछल जाता है।





# किट्टी

चित्रांकन एवं लेखन  
अजय कालड़ा

एक बार किट्टी और उसके दोस्तों ने पिकनिक मनाने का प्रोग्राम बनाया।

काश! हम एक चटाई साथ ले आते तो हम यहाँ पर थोड़ा आराम भी कर लेते।

ढीलूराम, तुम्हें तो हमेशा आराम करने की पड़ी रहती है। कभी घूम—फिर भी लिया करो।



चलो—चलो, वहाँ देखो एक पेड़ पर एक झूला लगा हुआ है, झूला झूलते हैं।









## मनुष्य का अच्छा मित्र है साँप

**साँपों** के बारे में हमें बहुत सी भ्रांतियां हैं। हम साँप को प्रायः अपना शत्रु मान लेते हैं लेकिन वास्तविकता यह है कि साँप मनुष्य का बहुत अच्छा मित्र है। साँप को मारना नहीं चाहिए क्योंकि एक तो सभी साँप विषैले नहीं होते और कुछ साँप मुख्य रूप से चूहों और छिपकलियों जैसे जीवों को अपना आहार बनाकर हमारी मदद ही करते हैं। यदि साँपों की कुछ प्रजातियां नष्ट हो जाएं तो चूहों की संख्या इतनी अधिक बढ़ जाए कि जीना दूभर हो जाए क्योंकि चूहों में प्रजनन बहुत तेजी से होता है। साँप चूहों की संख्या को नियंत्रित करने में हमारी मदद करते हैं।

जो साँप आदमी को काटते नहीं या ज़हरीले नहीं होते वे पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में मददगार हैं। जहाँ तक साँप के ज़हरीले होने का प्रश्न है सभी साँप ज़हरीले नहीं होते। हाँ कुछ साँप अवश्य ज़हरीले होते हैं। ज़हरीले साँप के विष से औषधि भी बनाई जाती है। सर्पविष से न केवल कई जीवनरक्षक दवाओं का निर्माण किया जाता है अपितु साँप के काटे के उपचार के लिए 'एंटी स्नेक वेनम' भी साँप के विष से ही तैयार किया जाता है। देश में कई स्थानों पर स्नेकपार्क इसीलिए स्थापित किये गये हैं कि उनसे विष प्राप्त कर उपयोगी औषधियों का निर्माण किया जा सके। वहाँ सिर्फ विषैले साँपों को ही पाला जाता है।

कुछ साँप अण्डे देते हैं तो कुछ बच्चे। दोनों ही तरह के साँप विषैले या विषहीन हो सकते हैं। कुछ साँप ज़मीन पर रहते हैं तो कुछ पानी में। समुद्रों में भी बड़े-बड़े साँप पाए जाते हैं। साँप के रहने के स्थान से भी उसके विषैले या विषहीन होने का संबंध नहीं है। निष्कर्षतः साँप

के रहने के स्थान और प्रजनन संबंधी विशेषता से उसके विषैले या विषहीन होने का कोई संबंध नहीं। साँप की कुछ प्रजातियां, चाहे वे जल में रहें या जमीन पर, अण्डे दें या बच्चे, आबादी से दूर रहें या पास, आकार में छोटी हों या बड़ी, ज़हरीली भी हो सकती हैं और विषहीन भी।

साँपों के आकार-प्रकार में भी विविधता पाई जाती है। भारत में पाए जाने वाले सबसे छोटे साँप की लम्बाई मात्र चार इंच होती है जिसे ब्लाइंड स्नेक कहा जाता है। दुनिया का सबसे लम्बा साँप एक अजगर होता है रेटिक्यूलेटिड पाइथन। ये तीस फुट से भी ज्यादा लम्बा पाया जाता है। अजगर अण्डे देता है। अजगर का मुख्य आहार खरगोश तथा हिरन जैसे जानवर होते हैं। कभी-कभी यह बड़े जानवरों को सटक जाता है और परेशानी में पड़ जाता है। एक बार एक अजगर ने मगरमच्छ को निगल लिया। मगरमच्छ ने अपनी सख्त चमड़ी और तेज दांतों से अजगर को भीतर से झटना घायल कर दिया कि अजगर की मौत हो गई लेकिन बचा मगरमच्छ भी नहीं।

साँप के काटने से कई बार इसलिए मृत्यु हो जाती है कि साँप का भय अधिक होता है चाहे वह विषहीन ही क्यों न हो। साँप के काटने पर रोगी को शीघ्र उपचार प्रदान कर अधिकांश मामलों में रोगी को बचाया जा सकता है।



कविता : राजेश पुरोहित

## ऋतुराज बसन्त

मैं ऋतुराज कहाता हूँ  
'बसन्त' नाम है मेरा ।  
  
पतझड़ मुझे देख भागता,  
खुशबू से आंगन महकाता ।  
  
खिल जाते पुष्प सारे,  
भौंरे गुनगुनाते प्यारे ।  
  
कोयल मोर पपीहे गाते,  
मीठे—मीठे गीत सुनाते ।  
  
खेतों की हरियाली प्यारी,  
नागिन जैसी बेलें प्यारी ।  
  
फूलों पर तितली मंडराई,  
रंग बिरंगी ये इठलाई ।  
  
सरसों फूली क्यारी महकी,  
धरा दिखे सबको न्यारी ।



बाल कविता : महेन्द्र कुमार वर्मा

रंग बिरंगे न्यारे फूल,  
हर उपवन के प्यारे फूल ।

निश्छल हँसी बिखराते,  
लगते राजदुलारे फूल ।

सुरभि लुटा लुटा मुस्काते,  
खुशबू के हरकारे फूल ।

बगिया करते ये गलुजार,  
लगते चांद सितारे फूल ।

पतझड़ के मौसम में ये सब,  
खो जाते बंजारे फूल ।

तितली के संग बातें करें,  
मुखरित होकर सारे फूल ।



कहानी : डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'

## लौट आया बल्लू

बात पिछले साल की है। परीक्षा सिर पर थी।

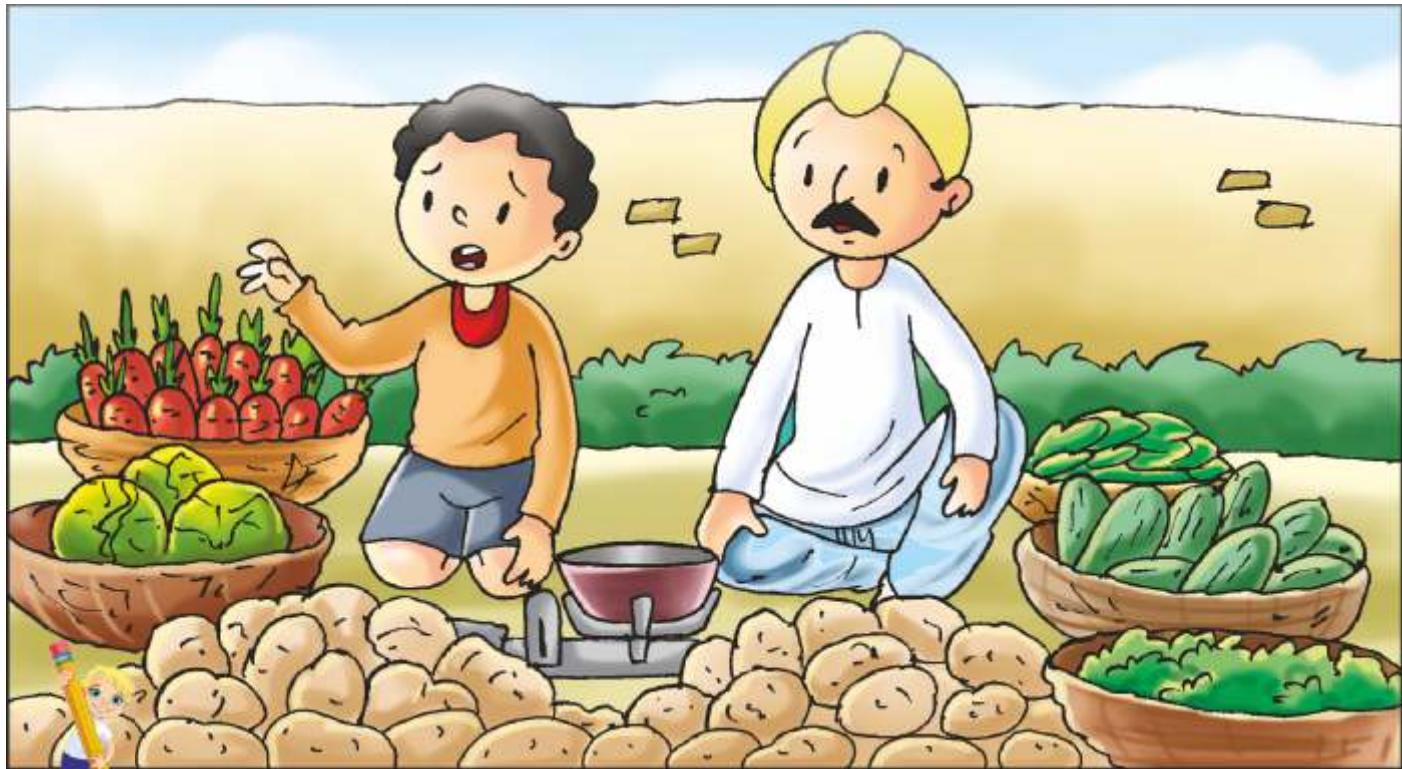
बल्लू उदास था। सोच रहा था कि यदि वह फिर फेल हो गया तो अपने दोस्तों को क्या मुँह दिखायेगा?

बल्लू मन ही मन सोच रहा था, "पापा सुबह ही उठा लेते हैं और सब्जी मंडी में अपने साथ ले जाते हैं। मुझे समझ नहीं आता कि मैं सुबह उठकर पढ़ूँ या उनके साथ सब्जी मण्डी से सब्जी लाऊँ? परीक्षा सिर पर है। मेरे दोस्त सुबह उठकर पढ़ते हैं। लेकिन मैं .....। जब स्कूल से घर आता हूँ तत्काल पापा का फोन

आ जाता है मम्मी के पास, "बल्लू को जल्दी भेजो। साथ काम कराना है।" मुझे समझ नहीं आता कि पापा मुझसे इतनी ऊँची-ऊँची आवाज में चीखने के लिए क्यों कहते हैं "आलू ले लो, गोभी ले लो, प्याज ले लो।" क्या मेरे ऐसे चीखने से सभी ग्राहक सब्जी लेने आ जायेंगे? जिस ग्राहक ने कोई सब्जी खरीदनी है, वह ठेले पर पड़ी सब्जी देखकर खुद ही आ जायेगा। पर पापा को कौन समझायेगा?"

लेकिन फिर यह सोचकर शांत होने की कोशिश करता कि पापा ज्यादा पढ़—लिखे नहीं हैं इसलिए पढ़ाई के महत्व को नहीं समझते।

बल्लू सुबह होते ही पापा के साथ सब्जी मंडी में जाकर सब्जी लादकर लाता। फिर डेढ़ दो घंटे के बाद घर आकर स्कूल जाने के लिए फटाफट तैयार होता। स्कूल से आता तो मम्मी



पापा का खाना बनाकर देती। बल्लू फिर बाजार में जाकर उन्हें खाना देता। जहाँ उसके पापा ठेला लेकर खड़े रहते थे। वह स्थान घर से दूर था।

“मैं इस बार भी पास नहीं हो सकता। लेकिन इसमें मेरा क्या कसूर है? अपने साथ चार-चार घंटे काम भी करवाते रहते हैं। पढ़ने के लिए वक्त भी तो चाहिये। क्या बिना पढ़े अच्छे नंबर आ सकते हैं? मैं फिर फेल हो जाऊंगा।”

“अरे कहाँ खोये हुए हो? लगाओ पांच सात आवाजें।” बैंच पर बैठे बल्लू को पापा ने एकदम कंधे से झिंझोड़ा तो बल्लू एकदम घबरा—सा गया और आवाजें लगाने लगा, “आलू ले लो, गोभी ले लो, प्याज ले लो, गाजर ले लो।

बल्लू की परीक्षा का परिणाम निकला। वही बात हुई जिसका बल्लू को डर था। वह फिर फेल हो गया। दूसरे साथी हँसते हुए एक दूसरे को बधाई दे रहे थे लेकिन स्कूल के मैदान के एक कोने में बैठा वह रो रहा था। उसका दिल करता था कि वह किसी को मुँह न दिखाये और कहीं जाकर छिप जाये।

रात हो गई थी लेकिन बल्लू घर न आया। उसे इधर—उधर ढूँढ़ा गया लेकिन कहीं न मिला।

गली मोहल्ले में शोर मच गया। बल्लू के दोस्तों और रिश्तेदारों से पता किया गया। लेकिन कोई पता न चला।

“मैं अब घर नहीं जाऊंगा। मैं दूसरी बार फेल हो गया हूँ। मैं अब किसी को मुँह दिखाने लायक नहीं रहा।” बल्लू सोच रहा था। गाँव में जाने वाली सड़क के किनारे पर बैठा वह इधर—उधर देख रहा था।

तभी बल्लू के पास एक गाड़ी आकर रुकी। बल्लू एकदम डर सा गया।

“अरे बेटा, इतनी रात में तुम अकेले सड़क के किनारे बैठे क्या कर रहे हो?” कार वाले ने कार से उतरकर उससे पूछा।

बल्लू चुप रहा।

उसका चेहरा भाँपकर कार वाला व्यक्ति फिर बोला, “मुझे मालूम है तुम घर से नाराज होकर आये हो? सच सच बताओ बेटा क्या बात है?”

कार वाले व्यक्ति को इतने प्यार से बोलता हुआ देखकर बल्लू को सच बताना ही पड़ा।

असलियत जानकर कार वाला व्यक्ति हँसकर बोला, “अरे लल्लू, मैं तुमको बताता हूँ कि मैं भी दो बार फेल हुआ था आठवीं कक्षा में लेकिन मैं घर छोड़कर नहीं भागा। यह कायरता है। जीवन में आई किसी मुश्किल से घबराना हार मानना है। मैंने तीसरी बार परीक्षा दी थी और अपनी मेहनत से अच्छे अंक लेकर पास हुआ था। अब मैं एक ऑफिस में नौकरी करता हूँ और मेरी तनख्वाह चालीस हजार रुपये महीना है। मेरी मानो, दृढ़निश्चय धारण करो। फिर जुट जाओ और देखो तुम्हारा आत्मविश्वास क्या रंग लाता है। कहो तो छोड़कर आऊं घर?”

“धन्यवाद अंकल। आपने मेरी दुविधा दूर कर दी। मैं तो परेशान होकर ही घर न जाने से कतरा रहा था लेकिन आपकी बातों ने मुझे शक्ति दी है। मैं फिर पढ़ूंगा।” बल्लू बोला।

बल्लू घर वापिस लौटने लगा।





रास्ते में उसे दूर से आते हुये दो व्यक्ति दिखाई दिये। बल्लू को कुछ शक—सा हुआ। दोनों व्यक्ति ही जाने—पहचाने से लग रहे थे। पास आये तो उसने पहचान लिया। उसके पापा पप्पू अंकल के साथ उसे ही इधर—उधर ढूँढते हुये फिर रहे थे।

“अरे बल्लू तुम यहाँ? हम तो तुम्हें दोपहर से ढूँढ रहे हैं। कहाँ छिप गये थे?”

बल्लू अपनी ओँखें पोंछने लगा।

यह देखकर पापा का मन भी भर आया और बोले, “बल्लू बेटा, तुम दोबारा फेल हो गये हो। कोई बात नहीं। तुम अकेले नहीं हो जो फेल हुये हो। दुनिया में बहुत से बच्चे फेल होते हैं। कोई अपनी गलती से कोई किसी मजबूरी से। मुझे इस बात का अहसास है कि मैं अपने

लालचवश तुमसे ठेले पर काम करवाता रहा। यह मेरी भूल थी। अब तुम केवल पढ़ोगे। मैं ज्यादा पैसे कमाने के लिये तुम्हारे बचपन का सहारा नहीं लूँगा।”

यह सुनकर बल्लू बोला, “पापा, मुझे भी एक अंकल ने ऐसी ही सीख दी है कि जिंदगी में हार मिले तो कभी घबराकर गलत कदम नहीं उठाना चाहिये। मैं फिर स्कूल में दाखिल होऊंगा और फिर देखना पापा। आपको यकीन दिलाता हूँ, सफल होकर दिखाऊंगा। यह मेरा आपसे वादा है।”

इस वर्ष बल्लू की परीक्षा का परिणाम आया। वह अपनी कक्षा में तीसरे स्थान पर आया था। बल्लू बहुत खुश था।

मम्मी—पापा खुश थे।



संग्रहकर्ता : विकास अरोड़ा (रेवाड़ी)

## कठ्ठी न भूलौ

★ सोच—समझकर व्यवहार करो। न किसी को धोखा दो, न किसी से धोखा खाओ।

— बाबा अवतार सिंह जी

★ दिखावे की सेवा लाभदायक नहीं होती। जितनी भी सेवा की जाए, दिल से की जाए। — बाबा गुरबचन सिंह जी

★ पेड़ खुद पूरे दिन धूप में खड़ा रहता है लेकिन आने—जाने वाले इन्सान को छाया देता है, ठंडक देता है। इसी प्रकार महापुरुष आप चाहे कष्ट सहते रहें लेकिन दूसरे को सुख देते हैं।

★ नकारात्मक प्रभावों से बचे रहने का एकमात्र उपाय है— सत्संग। जिस प्रकार जमीन में कील को मजबूती देने के लिए उस पर हथौड़े से बार—बार चोट की जाती है, उसी प्रकार ज्ञान पर मजबूती के लिए सत्संग निरन्तर आवश्यक है।

★ महत्वपूर्ण होना अच्छा है लेकिन अच्छा होना ज्यादा महत्वपूर्ण है।

★ हाथों का इस्तेमाल आंसू पोंछने के लिए करें, आंसू देने के लिए नहीं।

★ सहनशीलता और क्षमा करना इन्सान का सबसे बड़ा गुण है।

★ जीवन की नैया में हम अगर अभिमान के पत्थर भरते गये तो ढूबने से कोई नहीं बचा पायेगा।



★ अपनी बुराई देखना विनम्रता का प्रतीक है। अपनी बुराई को न देखना ही सब बुराईयों की जड़ है।

— बाबा हरदेव सिंह जी

★ सब्र, संतोष, प्यार में जीना ही असली जीना है।

★ जो सदगुरु पर अपना विश्वास पक्का करते हैं, उनके कठिन कार्य भी सरल हो जाते हैं। — निरंकारी राजमाता जी

★ दूसरों को नियंत्रित करने वाला व्यक्ति शक्तिशाली हो सकता है लेकिन जिस व्यक्ति ने स्वयं पर विजय प्राप्त कर ली हो, वह उससे कहीं अधिक बलशाली होता है।

— ताओं ते चिंग

★ परमात्मा का पता दिल को है, दिमाग को नहीं। — पास्कल

★ टालमटोल करने वाला सदा दुर्भाग्य से भिड़ा रहता है। — हीसियड

★ पुस्तक एक ऐसा तोहफा है, जिसे आप बार—बार खोल सकते हैं।

— गैरीसन कीलर



# पढ़ो और हँसो



बेटा : पिताजी, कोई आया है।

पिता : कौन है?

बेटा : कोई मूँछ वाला है।

पिता : कह दे नहीं चाहिए।



मोना : (लाली से) तुमने जो मधुमक्खियां पाली हैं, उनसे कोई लाभ हुआ?

लाली : हाँ, मेरे यहाँ मेहमानों का आना कम हो गया है।

— ओमसिंह अध्यापक (राजसमंद)



पत्नी : आप कहाँ जा रहे हों?

पति : शेर का शिकार करने जा रहा हूँ।

पत्नी : (थोड़ी देर बाद) तो जाओ ना, खड़े क्यों हो?

पति : कैसे जाऊँ, बाहर कुत्ता खड़ा है।



दुखी बैठे बंता से संता ने पूछा— टेंशन में क्यों हो भाई?

बंता बोला—क्या बताऊँ भैया, एक दोस्त को चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी के लिए दो लाख रुपये दिये थे। अब उसे मैं पहचान ही नहीं पा रहा हूँ।

— गुरमीत टुटेजा (इन्डौर)



राजीव : मेरी नजर बहुत तेज है। मैं दो किलोमीटर तक की चीज साफ-साफ देख सकता हूँ।

कल्लू : अरे, तुमसे ज्यादा तो मेरी नजर तेज है। मैं करोड़ों किलोमीटर दूर सूरज को देख सकता हूँ।



उस दिन क्रिकेट खेलते समय मैंने ऐसा शानदार शॉट मारा कि सारे खिलाड़ियों के साथ दर्शक भी भाग खड़े हुए।

पिंकू : ऐसी क्या बात हुई?

कल्लू : भाई गलती से गेंद ज़हरीली मक्खियों के छत्ते से जा टकराई।

— अविनाश (वडोदरा)



एक गंजे के सिर पर दो ही बाल थे। उनमें से एक बाल बोला— हम दोनों विवाह कर लेते हैं।

इस पर दूसरा बाल बोला — सरकार ने बाल—विवाह पर रोक लगा रखी है। विवाह किया तो हमें जेल हो जाएगी।



विनी : (दुकानदार से) 20 रुपए का रिचार्ज दो और यह बताओ कि 20 रुपए में कितने का टॉक टाईम मिलता है।

दुकानदार : 15 रुपए का।

विनी : बाकी 5 रुपए का भुजिया डालदो।  
— गुरचरण आनन्द (लुधियाना)

एक हाथी नदी में नहा रहा था। अचानक एक चूहा कहीं से आया और हाथी को बाहर आने का इशारा किया। हाथी बाहर आया तो चूहे ने उसे सिर से पैर तक देखा और बोला— अब वापस चले जाओ।

हाथी ने चूहे से इसका कारण पूछा तो चूहा बोला— मैं यह देखना चाह रहा था कि कहीं तुम मेरी निककर पहनकर तो नहीं नहा रहे हो।

— रवि कुमार राहुल (बराड़ा)



वेटर : सर, आप क्या लेंगे? चाय या कॉफी?

राजेश : मेरे लिए चाय ले आओ।

विजय : मेरे लिए भी चाय ले आओ लेकिन जरा साफ कप में ही लाना।

वेटर : (कुक से) दो चाय बना दो, एक चाय साफ कप में देना।



टीचर : मुँह में पानी, मुहावरे को वाक्य में प्रयोग करें।

छात्र : मैंने नल पर मुँह लगाया और मेरे मुँह में पानी आ गया।



चाची : अरे बेटा, कहाँ जा रहे हो?

दिनेश : एक साधु महाराज का प्रवचन सुनने।

चाची : ना बादल है ना बरसात फिर ये छाता क्यों?

दिनेश : साधु महाराज वहाँ ज्ञान की वर्षा करने वाले हैं।

— आरती अग्रवाल (खलीलाबाद)



बच्चा मम्मी दूध पिऊंगा।

मम्मी : दुध तो फट गया।

बच्चा : मम्मी सूई और धागे से सिल दो।



एक कच्चे रास्ते में पानी और कीचड़ में फँसी गाड़ियों को एक किसान धक्का मारकर निकलवाता था और बदले में कुछ रुपये ले लेता था।

एक साहब : (किसान से) वाह भाई, तुम तो दिन—रात लोगों की मदद करके ख़बू कमा लेते होंगे?

किसान : नहीं साहब, केवल दिन में कमाता हूँ रात में तो मैं यहाँ रास्ते पर ट्यूबवैल से पानी छोड़ता हूँ।

— राहुल (सन्त नगर, दिल्ली)



#### पहेलियों के उत्तर

1. हरी मिर्च, 2. टीवी, 3. मोबाइल, 4. नारियल,
5. केला, 6. संतरा 7. पपीता, 8. समय, 9. रोटी,
10. पुस्तक, 11. गर्मी, 12. पेन।

#### वर्ग पहेली के सही उत्तर

|          |         |         |          |         |         |
|----------|---------|---------|----------|---------|---------|
| 1<br>मै  | विस     | 2<br>को |          | 3<br>ना | 4<br>ना |
| सू       |         | 5<br>लं | का       |         | थु      |
| 6<br>र   | 7<br>का | ब       |          | 8<br>नी | ला      |
|          | 9<br>ज  | स       | 10<br>पा | ल       |         |
| 11<br>डा |         |         | 12<br>र  | म       | 13<br>न |
| 14<br>य  | म       | लो      | क        |         | रे      |
| र        |         |         | 15<br>र  | मे      | न्द्र   |



## दृश्या छापणे आपको हुँदै



- ★ संसार का सबसे बड़ा मेड्रक गोलियत, (कैमरून, अफ्रीका) के जंगलों में पाया जाता है, यह एक छोटे कुत्ते के बराबर का होता है।
- ★ अमोनिया सबसे ठण्डी गैस है।
- ★ जापान के लोग अपने देश को निथोन सूर्य की रश्मियों के नाम से प्यार से पुकारते हैं।
- ★ 'बैनाना आयल' केले से नहीं निकलता। इसे कोयले के रासायनिक आसवन से प्राप्त किया जाता है।
- ★ विश्व में सबसे ज्यादा होने वाली बीमारी दंतक्षय है।
- ★ आस्ट्रेलिया के ऊपर के हिस्से में स्थित 'एल्म' नाम टापू लगातार एक किनारे से दूसरे किनारे तक तैरता रहता है।
- ★ अफ्रीका के जंगल में एक ऐसा फूल पाया जाता है, जो एक मिनट में सात बार रंग बदलता है। वहाँ के निवासी इस फूल को 'इन्द्रधनुष' के नाम से जानते हैं।
- ★ पृथ्वी का 70 प्रतिशत हिस्सा समुद्र से आच्छादित है।
- ★ दक्षिण-पश्चिम एशिया में उगने वाले विशाल बांस के पेड़ 24 घंटे में एक मीटर तक बढ़ सकते हैं।
- ★ कंगारू का नवजात शिशु दो-चार इंच से बड़ा नहीं होता।
- ★ घोंघा ब्लेड की धार पर बिना धायल हुए चल सकता है।
- ★ मगरमच्छ अपने दांतों में फंसे मांस को निकालने के लिए चिड़ियों की मदद लेता है और उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाता।
- ★ जेबरा के शरीर पर काली धारियां नहीं सफेद धारियां होती हैं।
- ★ गोरिल्ला कभी भी सोते हुए खर्चाटे नहीं मारते।
- ★ आस्ट्रेलिया का 'सेमू' नामक पक्षी पत्थर खा लेता है और उसे आराम से पचा भी लेता है।
- ★ सऊदी अरब में एक भी नदी नहीं है।
- ★ नील नदी का पानी गर्म होता है।

संग्रहकर्ता : विभा वर्मा (वाराणसी)

### क्या आपको मालूम है?

- ★ भारत की सबसे बड़ी कृत्रिम झील का नाम गोविन्द सागर झील है।
- ★ भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक झील कश्मीर में स्थित वुलर झील है।
- ★ भारत में सबसे बड़ा पशुओं का मेला बिहार के सोनपुर नामक स्थान पर लगता है।
- ★ भारत का सबसे अधिक वनों वाला राज्य असम राज्य है।
- ★ भारत का सबसे बड़ा डेल्टा सुन्दरवन डेल्टा है। इसका विस्तार 8,000 वर्ग मील तक है।



दो बाल कविताएँ : रामसागर 'सदन'

## फूलों का आया मौसम

फूलों का आया मौसम  
वन—उपवन, खलिहान—खेत सब  
करते हैं हरदम गमगम।

दिशा—दिशा में खिली छटा  
ठंड—ओस, ओले—कुहरे का  
ऊँचा सब अभिमान लुटा।

धरती मां इठलाती अब  
पहन चुनरिया इन्द्रधुनष—सी  
बिखराती मुस्कान गजब।

सुख—सौरभ कण—कण छाता  
तितली—भौंरे और पपीहे  
खुलकर जोड़ रहे नाता।



## भौंरे

दल—बल लेकर गुनगुन करते  
काले—काले आते भौंरे,  
फूलों और मंजरियों पर नित  
फिरते हैं मंडराते भौंरे।

निपुण कलाकारों की जैसी  
बारीकी दिखलाते भौंरे,  
बिना किसी नाप—तोल के  
छत्ते बड़े बनाते भौंरे।

अपनी रानी की रक्षा हित  
हैं सर्वस्व लुटाते भौंरे,  
मौसम कोई आता जाता  
मगर नहीं घबराते भौंरे।



## दिसम्बर अंक का रंग भरो परिणाम



### सुहावनी

आयु 11 वर्ष

फ्लैट नं. 802, ब्लाक नं. 1

डीडीएएच आई डी फ्लैट  
मोतियाखान, पहाड़गंज, दिल्ली



### सिमरन कोहली

आयु 13 वर्ष

रेलवे स्टेशन के पास, मराण्डा,  
जिला : कांगड़ा (हि.प्र.)



### दिव्या कोहली

आयु 15 वर्ष

रेलवे स्टेशन के पास, मराण्डा,  
जिला : कांगड़ा (हि.प्र.)

### इनके अतिरिक्त जिनकी प्रविष्टियों को पसंद किया गया वे हैं—

लवलीन आहूजा (मोहाली)

आदित्य यादव (ठेकमाँ),

भूमि (सिन्धी चाली, गोधरा),

अनिशा (लाखेनगर, रायपुर),

निवांशी सैनी (शहजादपुर, अम्बाला),

सोनिया (आनन्द नगर, गोधरा),

तनिशा (पोस्टल कालोनी, गोधरा),

आन्या (पीतमपुरा, दिल्ली),

लक्षिता (गाँधी नगर, भिलाई),

लतिका प्रसाद (सरदार नगर, अहमदाबाद),

खुशी साहू (पंचशील नगर, रायपुर),

विवेक चोपड़ा (आदर्श नगर, फगवाड़ा),

देवांशी (खोखरा, अहमदाबाद),

हिमांशु (शिवाजी नगर, गुरुग्राम)

साहिल (पार्वती नगर, गोधरा),

सिद्धार्थ, रिया, भवित

(रविग्राम तेलीबांधा, रायपुर),

रिंकी (काशीराम नगर, रायपुर),

नंदिनी (जललालाबाद),

प्रियल, विधिता (अवंति विहार, रायपुर),

यश (शहेड़ा भगोल, गोधरा)।

## फरवरी अंक रंग भरो

सामने के पृष्ठ पर एक चित्र दिया गया है। इस चित्र में सुन्दर—सुन्दर रंग भरकर 20 फरवरी 2017 तक कार्यालय 'हँसती दुनिया', निरंकारी कॉम्प्लेक्स, निरंकारी सरोवर के पास, निरंकारी कालोनी, दिल्ली—110009 को भेज दें।

तीन सर्वश्रेष्ठ चित्रों के प्रतिभागियों के नाम (पते सहित) अप्रैल अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। चित्र के नीचे दिये गये रिक्त स्थान पर अपना नाम और पता अवश्य भरें।



## रंग भरो



नाम ..... आयु .....

पुत्र/पुत्री .....

पूरा पता .....

.....पिन कोड .....





## बुद्धि की परख

—प्रस्तुति : चाँद मोहम्मद घोसी

सुन्दरवन में पेड़ की डाल पर बैठे इस विचित्र पक्षी को ध्यान से देखिए और बताइए इसका मुँह, गर्दन, धड़, पैर व पूँछ कौन-कौन से पक्षियों की हैं?



# ਨਿਰਂਕਾਰੀ ਪਤਰ-ਪਤਰਿਕਾਏਂ ਪਢੋਂ ਔਰ ਪਢਾਏਂ?



**ਸਜ਼ਨ ਨਿਰਂਕਾਰੀ**  
(ਗਿਆਰਾਹ ਭਾਸ਼ਾਓਂ ਮੈਂ)



**ਏਕ ਨਜ਼ਰ**  
(ਤੀਨ ਭਾਸ਼ਾਓਂ ਮੈਂ)



**ਛੱਥੀ ਦੁਨੀਆ**  
(ਚਾਰ ਭਾਸ਼ਾਓਂ ਮੈਂ)

'ਸਜ਼ਨ ਨਿਰਂਕਾਰੀ', 'ਛੱਥੀ ਦੁਨੀਆ' (ਛਿੰਡੀ, ਪੰਜਾਬੀ ਵ ਅੰਗ੍ਰੇਜ਼ੀ) ਅਤੇ 'ਏਕ ਨਜ਼ਰ' (ਛਿੰਡੀ/ਪੰਜਾਬੀ) ਕੀ ਸਦਖਤਾ ਕੇ ਲਿਏ ਸਮਾਰਕ ਕਰੋਂ  
ਪਤਰਿਕਾ ਵਿਆਨ, ਨਿਰਂਕਾਰੀ ਕੱਸਲੇਕਥ, ਨਿਰਂਕਾਰੀ ਸ਼ੇਕਰ ਕੇ ਪਾਸ, ਨਿਰਂਕਾਰੀ ਕਲੋਨੀ, ਦਿੱਲੀ-110009

011—47660200, E-mail : patrika@nirankari.org



**Sant Nirankari Satsang Bhawan**  
1st Floor, 50, Morbag Road, Naigaon, Dadar (E) MUMBAI-400 014 (Mah.)  
e-mail : chandunirankari@yahoo.com & marathi@nirankari.org



**ਅਨ੍ਯ ਭਾਸ਼ਾਵਾਂ ਕੀ ਪਤਰਿਕਾਵਾਂ ਕੀ ਸਦਖਤਾ ਕੇ ਲਿਏ ਨਿਮਨਾਨੁਸਾਰ ਸਮਾਰਕ ਕਰੋਂ**



**TAMIL**  
Sant Nirankari Satsang  
Bhawan, #7, Govindan Street,  
Ayavoo Naidu Colony, Aminji  
Karai, CHENNAI-600 029 (T.N.)  
Ph. 044-23740830



**ORIYA**  
Sant Nirankari Satsang Bhawan,  
Kazidiha, Post Madhupatna,  
CUTTACK-753 010 (Orissa)  
Ph. 0671-2341250



**TELUGU**  
Sant Nirankari Satsang  
Bhawan, No. 6-2-970,  
Khairtabad, HYDERABAD-  
Pin : 500 029  
Ph. 0104-23317879



**GUJRATI**

Sant Nirankari Satsang  
Bhawan, 31, Pratappganj,  
VADODARA-390002 (Guj.)  
Ph. 0285-275068



**KANNADA**

Sant Nirankari Satsang  
Bhawan, 88, Rattanvillas Road,  
Southend Circle, Basavangudi,  
BELGURU-560 004 (Karnataka)  
Ph. 080-26577212



**BANGLA**

Sant Nirankari Satsang  
Bhawan, 1-D, Nazar Ali  
Lane, Near Beck Bagan,  
KOLKATA-700 019  
Ph. 033-22871658

**ਪਤਰ-ਪਤਰਿਕਾਵਾਂ ਕੇ ਪ੍ਰਸਾਰ ਅਭਿਆਨ ਮੈਂ ਧੋਗਦਾਨ ਫੈਕਰ ਸਫ਼ੁਲ ਮਾਤਾ ਜੀ ਕੇ ਆਸ਼ੀਰਵਦ ਕੇ ਪਾਤ੍ਰ ਬਣੋਂ**

Registered with the  
Registrar of Newspaper  
For India Under RNI No. 25672/73

Delhi Postal Regd. No. DL-(N)-01/0136/2015-17  
Licence No. U (DN)-23/2015-17  
Licenced to post without Pre-payment



## Spiritual Zone for kids

With the blessings of His Holiness  
Experience online spiritual learning  
with exciting and fun features  
highlights our mission's message.  
Visit regularly to watch tiny tots  
excelling in the spiritual journey.

[kids.nirankari.org](http://kids.nirankari.org)

- His Holiness Message
- Glimpse of Blessing
- Message in colors
- Poetry Fantasy
- Wacky and True
- Fun Games
- Hansti Duniya
- Kids Creation
- Kids Activities
- Jokes
- Avtar Vani
- Story Time

Share  
your talent  
in form of  
painting, poetry  
& story



Posted at NDPSO, Prescribed dates 21th & 22nd. Date of Publication: 16th & 17th (Advance Month)